Founder Editor :
Vincent Charles
Editorial Board:
Mr. Sunil Paul
Mr. Rajeev Hample
Mr. Samson Robinson
Copy Desk:
Mrs. Manju Paul
Prayer Cell:
Mrs. Sheela Chand
Mrs. Charlotte Paul
Mrs. Norma John
Mrs. Iris Smart
Mrs. Romila Bose
Mrs. Lucy Charles
Mrs. Seema Hample
Mrs. Florence Lawrence
Mrs. Usha Robinson
Computer Composing,
Designing & Graphics:
Rahul Charles

Annual subscription - Rs. 100/-

Please send the amount by D.D./Cheque in favour of 'Aatmik Safar' C- 3010, Indira Nagar Lucknow-226016

Tel :- (0522)- 2389956, 2359833

e-mail :-
vincentcharles2004@yahoo.co.in

AATMIK SAFAR MAGAZINE
is also available on
our Web Site :-
www.geocities.com/church.trinity

Aatmik Safar

Editorial...

There is nothing new in Dan Brown's "The Da Vinci code", because for the last two thousand years Christianity and Bible have been attacked by different people in different ways. But still the Bible is the best seller and much read book throughout the world. Christianity still occupies the number one position in the world. Because it is written in the Bible ***"grass withers and the flowers fall, but the word of our God (Bible) stands forever."*** **(Isaiah 40:8).**

If person like Dan Brown writes the book "The Da Vinci Code" or Ron Howard directs its film adaptation, it doesn't mean that it is going to affect the Christian Faith. No way it is going to tarnish the image of Christ. The Christians will not be disturbed. It is a work of fiction and has no historical importance. Infact it will increase our faith. Because it has already been predicted in the Bible many times that such things will happen before the end of the world. Bible is a book of past, present and future. It is a unique and wonderful book. It's ultimate author is God Himself. In 1778 the French writer, Voltaire, declared that in 100 years the Bible would no longer be in circulation but today the Bible is still the best selling book in the world, translated into more language than any other book. History says that the lives of many people have been changed by reading the Bible. If anybody wants to feel its power, please read it with prayer and dedication and you will feel its power. Even great scientists like Sir Isaac Newton (discovered laws of motions, laws of gravity and calculus), Sir James Simpson (discovered chloroform, anesthetics), Robert Boyle (relation between pressure & volume in gasses), Johannes Kapler (astronomy, laws of planetary motions) and Michael Faraday (electronic generator & electronic transformer) etc. believed that Bible is the living word of the God and accepted Jesus Christ as their saviour. Abraham Lincoln declared "The Bible is the best gift ever given to man". George Washington said that "It is impossible to govern the world without God and Bible"

No doubt I was born and brought up into a Christian family but I am a Christian because I have experienced the power of Living Jesus Christ in my life. In 1992 when I accepted Jesus Christ as my personal Saviour, my life was completely changed. All bad habits like smoking, occasional drinking etc. left me. Because Jesus Christ has come not only to save us but also to transform our lives. At this time, I remember those people who nailed Jesus Christ, put crown of thorns on His head, crucified Him and insulted Him. But even then Jesus Christ offered this prayer for them from the cross **- "Father, forgive them, for they do not know what they are doing." (Luke 23:34).**

VINCENT CHARLES

भाग – 1

क्रूस से पहला वचनः

''हे पिता, इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या करते हैं ?'' (लूका 23:24)

S.W. PRASAD
M.A., B.D.
Principal,
Lucknow Christian
Inter College,Lucknow

क्रूस पर से उद्धारकर्ता प्रभु यीशु ने सात वचन (Seven Words) बोले थे। आत्मिक सफ़र के आने वाले प्रत्येक अंक में बारी बारी से हम इन सातो वचनों पर प्रकाश डालेंगे। पहला वचन इस अंक (Issue)में प्रकाशित कर रहे हैं । आत्मिक सफ़र टीम आदरणीय महोदय श्री एस0 डब्लू प्रसाद,जी प्रधानाचार्य, लखनऊ क्रिश्चयन इन्टर कालेज का हृदय से अभारी है कि उन्होंने हमे अपने द्वारा लिखे इन सातों वचनों को आत्मिक सफ़र मे प्रकाशित करने कि अनुमति प्रदान की। इसके लिए हम सदैव उनके कृतज्ञ रहेगें।

मसीह का क्रूस से पहला वचन उसके हृदय के भारी बोझ का परिचायक हैं। मृत्यु के समीप प्रभु के हृदय में किसी के प्रति किसी प्रकार के क्रोध व बदले की भावना के लक्षण नहीं थे। उसके मुंह से निकला पहला शब्द ''पिता'' में अपने अत्याचारियों के लिये एक निवेदन व याचना थी। उल्लेखनीय है, कि प्रभु यीशु ने अपनी सांसारिक सेवा का शुभारम्भ अपने पिता से प्रार्थना करके प्रारम्भ किया था, तथा आज क्रूस पर सेवा के अपने अन्तिम क्षणों में भी वह अपने पिता से प्रार्थना कर रहा था।

प्रभु की क्रूस पर की गई यह प्रार्थना कुछ विशेष तथ्यों पर प्रकाश डालती हैः यह नहीं जानते कि क्या करते हैं ''क्या स्पष्ट करता है ? क्या वास्तव में वे लोग इस तथ्य से अनभिज्ञ थे कि वे एक धर्मी व निर्दोष व्यक्ति को क्रूस पर चढ़ा रहे थे ? पिलातुस ने बड़ी भीड़ के सम्मुख स्वीकार करते हुये कहा था **''मैं इस व्यक्ति में कोई दोष नहीं पाता''** और जब भीड़ को यह पता चला कि पर्व के अवसर पर पिलातुस यीशु को छोड़ देने की योजना बना रहा है तो उन्होंने चिल्लाकर बर अब्बा के छोड़े जाने की बाते कहीं। क्या भीड़ बरअब्बा को एक लुटेरे व डाकू के स्वरूप में नहीं जानती थी ? क्या यहूदा यह नहीं जानता था कि यीशु ने ऐसा कुछ नहीं किया था जिसके लिये दोषी ठहराया जाता ? क्या मसीह की अदालत न्याय का केवल एक तमाशा नहीं थी ? अतः यह प्रश्न स्वाभाविक ही है कि उपस्थित जनसमूह किस बात से अनभिज्ञ था ?

आज संसार में मनुष्य की अनभिज्ञता आत्मिक सत्यों से जुड़ी हुई बातों के विषय में है। तनिक अविश्वासी यहुदियों के विषय विचार करें। उनके अन्धेपन के विषय सोचें। आज के दिन तक सम्भवतः वे अपनी आंखों को नहीं खोल सके हैं। वे आज भी एक मसीह की प्रतिक्षा में हैं जो उन्हें मुक्ति देगा। सम्भवतः मानव इस प्रकार की दशा में सदा से रहता चला आया है। मनुष्य परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली ज्योति के अनुसार अपना जीवन नहीं बिताना चाहता। परन्तु फिर भी प्रभु हमारे लिये प्रार्थना कर हमें अंधकार के अंधेपन से मुक्त करना चाहता है। प्रभु अपनी याचना से परमेश्वर पिता की दया को जागृत करना चाहता है। क्रूस पर बलिदान देने वाला प्रभु यीशु मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच मध्यस्थता कर रहा है। क्रूस पर प्रभु ने वह पूरा किया जिसकी उसको शिक्षा दी थी। उसने क्रूस पर क्षमा का व्यवहारिक उदाहरण प्रस्तुत किया। वहां उसके सतानेवाले, यातना देने वाले, उस पर झूठे आरोप लगाने वाले तथा अपमानित करने वाले सभी लोग उपस्थित थे। प्रभु ने सभी के लिये

प्रार्थना की। परन्तु क्या प्रभु की प्रार्थना का उत्तर प्राप्त हुआ? हमें यह समझ लेना चाहिये कि पापों की क्षमा हम उसी समय प्राप्त कर सकते हैं जब हम उनका अंगीकार कर लें। प्रार्थना का उत्तर मिलेगा। पिन्तेकुस्त के दिन कितने लोगों ने प्रभु के उद्धार की सामर्थ पर विश्वास किया और बच गये।

प्रभु की क्रूस पर प्रार्थना हमें स्मरण कराती है कि हमें पापों की क्षमा की आवश्यकता है, चाहे वे जानबूझ कर किये गये हो अथवा अनजाने में। पापों की क्षमा मसीह के बलिदान में हैं। **कौन जानता है कि मसीह की प्रार्थना के उत्तर में परमेश्वर ने न्याय के दिन को पिछले 2000 वर्षों से टाले रखा है।** परन्तु यदि हम परमेश्वर के पास न आयें तो हम क्यों कर इस क्षमा के भागीदार बन सकते हैं।

प्रभु की इस विशेष प्रार्थना के गहन अध्ययन से हमें कुछ और रहस्यों को समझने में सहायता मिलती है। अक्सर हम भी इसी प्रकार की परिस्थितियों का शिकार हो जाते हैं। हम संसार में उठ रहे तूफ़ानों से घिर जाते हैं। बचाव का कोई मार्ग हमारे सामने नहीं आता और तब अपनी स्वाभाविक आवश्यकता के कारण हम कह उठते है ''हे प्रभु, मेरी सहायता कर।'' ऐसी परिस्थिति में हमें परमेश्वर के सिंहासन के सामने आना ही चाहिये। ऐसी प्रार्थना करने से कोई हानि नहीं और यदि प्रभु यीशु ने पिता से ऐसी प्रार्थना की तो यह पूर्णतया स्वाभाविक था।

परन्तु जो तथ्य हमें यीशु द्वारा की गई प्रार्थना से अचम्भित करता है, वह यह है कि उपरोक्त प्रार्थना प्रभु ने अपने लिए नहीं की थी। उसने यहां अपने बचाव के लिये पिता को नहीं पुकारा था। इस संकट की घड़ी में उसने अपने प्रियों, सम्बन्धितों, तथा मित्रों के लिये परमेश्वर की दोहाई नहीं दी उसने अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना की थी। उसने उन लोगों के लिये प्रार्थना की थी जो उसकी मृत्यु के लिये उत्तरदायी थे। जिन्होंने उसके मुंह पर थूका था तथा उसे अपमानित किया था।

आपको स्मरण होगा कि अपने सेवा काल में भी यीशु ने अपने संदेश में लोगों से कहा था कि अपने शत्रुओं को केवल एक ही बार क्षमा न करो परन्तु '' सात के सत्तर बार''। प्रभु ने अपने पर्वतीय संदेश में बड़ी भीड़ के सम्मुख भी यही प्रचार किया था परन्तु आज प्रभु कलवरी पर अपने बलिदान से अपनी शिक्षा को व्यवहारिक रूप दे रहा था। मानव के लिये एक अनन्त क्षमा की व्यवस्था कर रहा था। इससे सुन्दर और क्या हो सकता है कि अपराधी को अनन्त दण्ड के भागी होने से मुक्ति मिल जायें !

प्रियों इस संदर्भ में मैं यह कहना भी उचित समझता हूं कि आप यह जान लें कि आखिर क्षमा है क्या ? यह परमेश्वर के साथ संगति की पुनः स्थापना है। जब परमेश्वर हमें क्षमा करता है तो हमें वापिस अपनी मित्रता में सम्मिलित कर लेता है। वह हमारे बुरे अतीत को भूल जाता है तथा नई संगति में भागी कर हमें एक नये जीवन का अधिकारी बना देता है। अतः अपने शत्रुओं के लिये प्रार्थना कर यीशु ने उन्हें परमेश्वर की संगति का भागीदार बनने का अवसर प्रदान किया था।

प्रभु ने पिता से यह प्रार्थना पूर्ण आत्मविश्वास के साथ की थी तथा अब यह हम पर निर्भर करता है कि हम इस प्रार्थना को अपने लिये सार्थक बनायें। प्रश्न यह है कि हम इसे किस प्रकार से संभव बना सकते हैं ? यह उसी समय संभव होगा जब हम इस क्षमा को ग्रहण करने के लिये तैयार होंगे। हमें अपनी आवश्यकता को समझना होगा। हमें अपने पापों का अंगीकार करना होगा। जो क्षमा की आवश्यकता का अनुभव करते हैं। वही परमेश्वर को क्षमा देने का अवसर प्रदान करते हैं।

(to be continued.....)

जिंदगी का नूर

S. D. Shauq Jalandhari
Chhattisgarh

भटकते क्यों हो अंधेरों में रौशनी के लिए मसीहा नूर है दुनियां में जिंदगी के लिए।

तेरे करम पे भरोसा है जिंदगी में जिसे वो बोझ बन नहीं सकता कभी किसी के लिए।

ये उसके हाथ इबादत कबूल हो के न हो झुका दिया है मगर सर को बंदगी के लिए।

खुदा – ए – पाक को इक दिन हिसाब देना है कभी तो सोचिये ये बात जिंदगी के लिए।

गुनाहगार थे जितने उन्हें बचाने को नजात लाए मसीहा सलामती के लिए।

मैं जान – ओ – दिल से मसीहा निसार हूँ तुझ पर गमों का बोझ उठाया मेरी खुशी के लिए।

हयाते अबदी के वारिस वो लोग होते हैं जो जान अपनी गवांते हैं नासरी के लिए।

सलीबी राह तुम्हें इख्तीयार करनी है अगर है जीना मसीहा में रास्ती के लिए।

तू अपने खून से मेरे गुनाह धो देना तेरा लहू तो है अक्सीर जिदंगी के लिए।

गुज़रना पड़ता है दार – ओ – रसन की मंजिल से कलेजा चाहिये ईसा से आशिकी के लिए।

किसी के दर्द में जो ''शौक'' काम आ न सके वो शख्त बोझ है धरती पे जिदंगी के लिए।

गवाही

Robin Howard

मैं परमेश्वर का धन्यवाद देना चाहता हूँ, कि उसने मुझे एक नया जीवन दिया। 20 अप्रैल 2006 की शाम को मुझे और मेरी पत्नी को एक कनवेन्शन में जाना था, सुबह जब मैं अपनी ड्यूटी पर गया, तब अचानक मेरे पेट में बहुत तेज दर्द उठा! पास के ही एक चिकित्सक ने मेरा इलाज किया, उस दिन शाम को फिर से वही दर्द शुरू हो गया, असहनीय दर्द के कारण हम कनवेन्शन में भी नहीं जा पाए, सब बहुत परेशान हो गए, ऐसे ही 7–8 दिन सिविल अस्पताल में इलाज चला। कुछ दिन के बाद मेरी हालत इतनी ज्यादा खराब हो गई कि चिकित्सक थक गए, (Diagnosis) करने पर पता चला कि मेरे ''पैन्क्रियाज़ में चर्बी जम गई है और वह इन्सुलिन की जगह पानी छोड़ रहा है कुछ भी खाना मेरे लिए ज़हर के बराबर था। फिर परमेश्वर ने मेरे घर वालों और अन्य चिकित्सक को समझ दी, कि उन्होंने मुझे PGI Hospital में भर्ती करवाया, सबने मेरे लिए उपवास रख–रखकर प्रार्थनाएं की क्योंकि उस समय मेरे लिए सिर्फ प्रार्थना की ही जरूरत थी।

परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उसने PGI अस्पताल के चिकित्सक द्वारा मेरा सही इलाज करवाया और मैं दिन–ब–दिन ठीक होता चला गया।

बिमारी के बिस्तर पर पड़े जब मैं अपनी आखरी सांसे गिन रहा था, तब सिर्फ परमेश्वर ने मेरी सहायता की, और मुझे मौत के मुँह से निकाल कर एक नया जीवन प्रदान किया। मैंने प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण किया, आप मेरे लिये प्रार्थना करें कि मैं प्रभु में बढ़ता रहूँ।

चिन्ताओं पर विजय

(VICTORY OVER WORRIES)

Rev. (Dr.) Pradeep S. Gunnar
Director - Agni Ministries

चिन्ता करना एक ऐसी बीमारी है, जो मनुष्य के शरीर, आत्मा, मष्तिष्क एंव समस्त व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। वर्तमान समय में नाना प्रकार की बिमारियों की जड़ 'चिन्ता' हैं। पवित्रशास्त्र बाईबल में लिखा हैं – **"किसी बात की चिन्ता मत करो, परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किये जाये। तब परमेश्वर की शान्ति जो समझ से परे है, तुम्हारे ह्रदय एंव तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरिक्षत रखेगी। (फिलिप्पियों 4:6.7)"।**

पवित्रशास्त्र बाईबल के अनुसार पांच कार्य है जिनको करने से आप चिन्ताओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं

1. सम्पूर्ण समर्पण (Dedication to God)–

रोमियों 14:8 के अनुसार एक मसीही चाहे जिस भी परिस्थिति में हो, वह मसीह का है। समर्पित मसीही निरन्तर प्रार्थना का जीवन बिताता है। वह परमेश्वर के वचन का

ध्यान करता है, तथा मसीही संगति में बना रहता है। यह बातें उसे मसीह यीशु के साथ जोड़े रखती है। पूर्ण समर्पण और मसीह की सहभागिता हमारी सहायता करती है, कि हम विभिन्न चिन्ताओं पर विजय प्राप्त करें।

2. सम्पूर्ण निर्भरता (Dependence on God)–

भजनसंहिता 37:5 के अनुसार जब एक मसीही अपने प्रभु पर भरोसा रखते हुये अपनी चिन्ताओं को यहोवा पर डाल देता है तो प्रभु उसे चिन्तामुक्त कर देते है। अपनी स्वंय की सामर्थ पर भरोसा रखने से हमें निराशा और असफलता ही मिलती है। जब हम प्रभु पर भरोसा रखते है, तो वह समस्त उत्तरदायित्वों को पूरा करने में हमारी सहायता करता है। "यदि आप विश्वास करते है कि संसार की समस्त बातों में परमेश्वर का हाथ है तो अपने जीवन की समस्त बातों को परमेश्वर के हाथ में दे दीजिये"। क्योंकि प्रभु सर्वज्ञानी, सर्वसामर्थी और सर्वव्यापी है।

3. सम्पूर्ण आनन्द (Delighting in God)–

फिलिप्पियों 4:4 के अनुसार प्रभु में ही सम्पूर्ण आनन्द है। यह "आनन्द अनुकूल एवं प्रतिकूल" दोनो परिस्थितियों में मनुष्य के जीवन में बना रहता है। जब एक मसीही प्रभु में आनन्दित होता है। तो वह सर्वदा उन आशीषों पर ही ध्यान लगाता है जो प्रभु ने उसे दी है। उसका ध्यान उन बातों पर नहीं जाता जो उसने खोया हैं या नहीं पाया हैं। इस प्रकार उसकी चिन्तायें अपने आप ही कम होती चली जाती हैं।

4. सम्पूर्ण परिश्रम (Diligence for God)–

2 कुरिन्थियों 5:14.15 के अनुसार एक मसीही केवल, अपने मसीह के लिये जीता है। उसका परिश्रम अपने मसीह की महिमा एवं तारीफ के लिये होता है। जब भी वह मसीह के कार्य से जी चुराने लगता है, या सुस्त पड़ जाता हैं, तो तमाम चिन्तायें उसे घेर लेती है। क्योंकि शैतान को अपना कार्य करने का अवसर मिल जाता हैं। 'चिन्ता' शैतान का एक ऐसा हथियार है, जो किसी भी व्यक्ति को मसीही सेवा से अलग कर देता है। प्रभु स्वंय उनकी चिन्ता करता है, जो मसीह को अपने जीवन में प्राथमिकता देकर उसके कार्य में लगे रहते हैं।

5. सम्पूर्ण अगुवाई (Direction from God)–

यूहन्ना 16:13 के अनुसार पवित्र आत्मा मसीहियों की समस्त परिस्थितियों में अगुवाई करता है। पवित्र आत्मा द्वारा संचालित जीवन में 'चिन्ताओं' का कोई

(शेष भाग पृष्ठ संख्या 13 पर)

दुआ-रूहानी जिन्दगी की धड़कन

SABIR ALI
Trans World Radio - India

सभी पाठकों को खुदावन्द येसु मसीह के नाम में साबिर अली का आदाब। उम्मीद है कि आप सब एक खुशहाल ज़िन्दगी गुजार रहे होंगे, मेरी नेक तमन्ना आपके साथ है।

आजकल हम ''आत्मिक सफर'' पत्रिका के तहत प्रार्थना या दुआ के बारे में कुछ बातें देख रहे हैं। मुझे यक़ीन है कि आप इन पैग़ामात के ज़रिए ज़रूर फ़ैज़याब हो रहें होंगे।

प्रिय भाई – बहन, कहा जाता हैं कि दुआ या प्रार्थना रूहानी ज़िन्दगी की धड़कन है, और यह बिलकुल सच है। जब तक धड़कनों का सिलसिला जारी रहता है तब तक इन्सान ज़िन्दा रहता है और जब यह धड़कने रूक जाती हैं, इन्सान की ज़िन्दगी भी रूक जाती है। 'रूहानी ज़िन्दगी की धड़कन दुआ है, और जब दुआ किसी की ज़िन्दगी में नहीं रहती उसकी रूहानी जिन्दगी मुर्दा हो जाती है।

पिछले अंक में हमने देखा था कि **''दुआ क्यों करनी चाहिए?''** लेकिन इस अंक में हम देखेगे कि **''दुआ कब करनी चाहिए?''** मेरे भाई हर मज़हब और कौम में दुआ करना सिंखाया गया है और उसके लिए वक्त भी बताया गया है। हमें दुआ कब करनी चाहिए इसको जानने के लिए हम पांच बातें आपकी ख़िदमत में पेश करते हैं।

1. हमें निर्धारित और ठहराए गए वक्त के अनुसार दुआ व प्रार्थना करनी चाहिएः हर एक मज़हब में दुआ व प्रार्थना का एक समय निधारित है। कुछ लोग दिन में सात बार दुआ करते हैं। कुछ लोग दिन में तीन बार, कुछ लोग दिन में पांच बार , और कुछ लोग जब भी मौका मिले कई बार या बार–बार दुआ करते हैं। मतलब यह कि मजहबी ऐतबार से जो वक्त आपको बताये गए हैं उन वक्तों में आपको जरूर दुआ करनी चाहिए।

2. हमें हर वक़्त दुआ करनी चाहिएः यह हमारे लिए येसु मसीह का फ़रमान है। उन्होंने फ़रमाया हर वक्त जागते और दुआ करते रहो। मान लीजिए अगर आप निर्धारित या ठहराए गए वक्त पर दुआ नहीं कर सके तो उसके लिए आप कुसूरवार साबित नहीं होंगे। आप अपने काम से फुर्सत पाकर इस नेक काम को बाद में अन्जाम दे सकते हैं। हर वक्त दुआ करने का अर्थ यही है कि जब भी आपके पास खाली वक्त है उसे आप दुआ में गुजार सकते हैं। यह हुक्म वहाँ पर बखूबी लागू हो सकता है जहाँ समय की पहचान नहीं हो सकती और जहाँ पर छै–छै महीने सूरज दिखाई नही देता। अगर घड़ी न हो तो ऐसी जगह पर निर्धारित समय पर दुआ करना नामुमकिन होगा। बाल्कि हर वक्त दुआ करने का फार्मूला ऐसी जगह पर बड़ा कारामद साबित होगा।

लूका की इन्जील के अठारवे बाब की पहली आयत में येसु मसीह ने फ़रमाया, **हर वक्त दुआ करते रहना और हिम्मत न हारना चाहिए।** मेरे भाई – बहन दुआ व प्रार्थना में लगे रहना कोई आसान काम नहीं है। बहुत से लोग इस सिलसिले को क़ायम नहीं रख पाते, वह हिम्मत हार जाते हैं। ज़िन्दगी में दुआ – प्रार्थना को जारी रखना और उस पर क़ायम रहना बड़ी हिम्मत का काम है।

3. दुआ आजमाइश के वक्त करनी चाहिएः येसु मसीह ने फ़रमाया ''दुआ करो ताकि आज़माइश में न पड़ों ।'' सच–मुच अगर आज़माइश के वक्त कोई चीज हमारी मदद कर सकती है तो वह है ''दुआ या प्रार्थना ।'' दुआ के ज़रिए हम हर एक आज़माइश पर गालिब आ सकते हैं। मत्ती की इन्जील के छठे बाब की 13 वीं आयत में येसु मसीह ने अपने शागिर्दो को दुआ करते वक्त एक खासबात सिखाई। उन्होंने फरमाया, ''जब तुम दुआ मांगों तो दुआ में खास तौर से यह कहो, हमें आजमाइश में न ला बल्कि बुराई से बचा।''

मेरे भाई हम दुआ के जरिए हर आजमइिश का सामना कर सकते हैं इस लिए आजमाइशों पर फतह पाने के लिए हमें सबसे बड़े हथियार दुआ का इस्तेमाल करना चाहिए।

4. दुआ मुश्किल के वक्त करनी चाहिएः मेरे भाई अगर गहराई से गौर करें तो इस ज़िन्दगी में बहुत सी मुश्किलात हैं। बहुत से दर्द हैं, बहुत से ग़म हैं और बहुत से ज़ख्म हैं। नदी की लहरें जिस तरह पानी के बुलबुले को ज्यादा देर कायम नहीं रहने देती, उसी तरह इन्सान भी मुश्किलात के समुन्द्र में एक पानी के बुलबुले की मानिन्द है। उसे भी मुश्किलात की लहरे बार – बार थपेड़े मारती रहती हैं। और इस तरह उसका वजूद ख़तरे में पड़ जाता है। लेकिन ऐसे वक्त में काम आती है दुआ जो मुश्किल से मुश्किल घड़ी में हमारे हौंसले को पस्त होने से रोकती है।

मेरे भाई यहाँ पर एक बात और हमें अच्छी तरह जान लेनी चाहिए। वह यह कि हुआ कोई जादू या जन्तर – मन्तर नहीं है जो हर मुश्किल को दूर कर दे। इस से कई बार हमारी तसल्ली और हौंसला अफ़जाई ही होती है। लेकिन कई बार मुश्किलें दूर भी हो जाती हैं।

मुश्किल की घड़ी में येसु मसीह गत–समनी के बाग में दुआ कर रहे थे लेकिन फिर भी उन्हें गिरफ़तार कर लिया गया और सलीब पर चढ़ा दिया गया। उनकी इस दुआ ने सलीब उनकी ज़िन्दगी से दूर नहीं की बल्कि इस दुआ के ज़रिए मसलूब होने की उन्हें हिम्मत जरूर मिली।

हो सकता है जो मुश्किलात आप पर आयें वह आपकी भलाई के लिए हों और उन मुश्किलात में होकर आपको जाना पड़े। लेकिन ऐसे मौके पर दुआ आपकी इतनी मदद ज़रूर करेगीं कि वह आपको मुश्किलात का सामना करने के लाएक़ बना दे। इसलिए जरूरी है कि हम मुश्किलात में दुआ ज़रूर करें। अपने खत के पांचवे बाब में जनाबे याकूब लिखते है कि, ''अगर तुम में कोई मुसीबतज़दा हो तो दुआ मांगे।''

5. दुआ खुशी के वक्त करनी चाहिएः जनाबे याकूब अपने खत में इसके ऊपर भी रौशनी डालते हैं। वह लिखते हैं, ''अगर तुम में कोई खुश हो तो हम्द के गीत गाये। मेरे भाई मुश्किल की घड़ी में दुआ करना तो सबको आता हैं, मगर खुदा का सच्चा बन्दा वह है जो खुशी के वक्त भी खुदा को याद करे और उसका शुक्र बजा लाये। अक्सर यह देखने को मिलता है कि जब इन्सान के दिन अच्छे होते हैं और वह खुशहाली की ज़िन्दगी जी रहा होता है तो उस वक्त उसे दुआ बन्दगी से कोई मतलब नहीं रहता। जिस तरह लालची और बे–मुरव्वत औलादें खुशहाल ज़िन्दगी जीने पर माँ – बाप को भूल जाती हैं और उनसे कोई रिश्ता नहीं रखती उसी तरह थोड़ी सी खुशहाली पाने के बाद आस्मानी बाप की लालची और बे – मुरव्वत औलादें भी अपने बाप से रिश्ता तोड़ लेती हैं। फिर ज़िन्दगी में न तो दुआ – प्रार्थना रहती हैं, न शुक्रगुजारी और न गिरयाविजारी।

हमें याद रखना चाहिए कि ''दुआ'' रूहानी ज़िन्दगी की धड़कन है। जिस दिन यह धड़कन रूक जाएगी

उसी दिन हमारी रूहानी ज़िन्दगी भी रूकं जाएगी। और हम भी हजरत आदम की तरह रूहानी तौर पर इन्तिकाल कर जांएगे। लेकिन हमारा आस्मानी खुदा रूहानी तौंर पर हमें जिन्दा रखना चाहता है और इस लिए चाहता है, ''दुआ'' जो रूहानी ज़िन्दगी की धड़कन है हमें जिन्दा रखने के लिए हमारे सीने में धड़कती रहे। आमीन

बाकी अगले अंक में .....

नोटः– प्रार्थना से सम्बन्धित इन खास सन्देशों को प्राप्त करने के लिए पत्रिका के अगले अकं के लिए तुरन्त लिखें। यदि प्रार्थना से सम्बन्धित आपके पास विषय हैं तो उन्हें भी पत्रिका के सम्पादक को तुरन्त भेजें ताकि उनके लिए प्रार्थना आरम्भ की जा सके। धन्यवाद । प्रभु का सेवक,।

साबिर अली खान, (TWR India) Ph. 0522-2761283

विश्ववाणी

कार्यक्रम–''संपर्क''

पो. बॉ. न0. 317
लखनऊ–226 001
उत्तर प्रदेश

अवश्य सुनें
कार्यक्रम – ''संपर्क''
हर **रविवार** शाम **6:30 –7:00**
शॉर्ट वेव्ह 41 मीटर बॅन्ड पर

भाषा	कार्यक्रम	दिन	समय
हिन्दी	संपर्क	रविवार संध्या	6:30–7:00
	मधुर समय	रविवार संध्या	6:15–6:30
	सत्य वचन	सोम–शुक्र रात्री	8:45–9:15
	आशाभरी नारियाँ	शुक्र रात्री	7:15–7:45
	मार्गदर्शन	शनि–रवि रात्री	7:30–8:00
	मीठा ज़हर	बृहस्पतिवार रात्री	7:15–7:30
	अर्पण	बृहस्पतिवार रात्री	7:30–7:45
	वेदपाठशाला	सोम–शक्रु रात्री	7:00–7:15
	जीवन की खोज	सोम–बुध रात्री	7:15–7:45
उर्दू	नूरे इलाही	सोम–शुक्र रात्री	7:15–7:45
	शक्सी राबता	रवि रात्री	8:30–9:00
पंजाबी	साची बानी	सोम–शुक्र रात्री	8:15–8:45
	संपर्क	शनि रात्री	8:30–9:00
	जिन्दगी दी राह	शनि–रवि रात्री	8:00–8:30

;hÓ l iki d fy; iÓpkrki d juk

LYRICS BY:
SHANON E. LYALL

मिट्टी का पुतला आदमी यह जानता नही
सृष्टि का कर्ता कौन है, पहचानता नही।।

केवल घमंड में चूर है, पल की खबर नही
मिट जायेगा खुदी मे, समझता भी ये नही।।

बचपन, जवानी में, खुदा को भूल जाता है
इबादत भी रब की करना, वह जानता नही।।

हर दिन गुन्हा करता और बेखौफ रहता है
मज़दूरी गुनाह की मौत, ये वह जानता नही।।

दोज़क की आग तुझको, जलायेगी एक दिन
माफ़ी खुदा से जा के, काहे मांगता नही।।

ईमान् ला के डाकू ने फ़िरदौस पा लिया
इसां नाजात पाना भी, क्यों चाहता नही।।

दुनियाँ में भटकता ही तू, हरदम ही रहेगा
सच्चाई दिल में लाना, अगर चाहता नही।।

मौका कभी न तुमको दुबारा भी मिलेगा
इस बार तौबा करना, अगर चाहता नही।।

भाग–3

अभिषेक की चार कुंजियाँ

Snehlata David
Nehemiah Prayer Cell

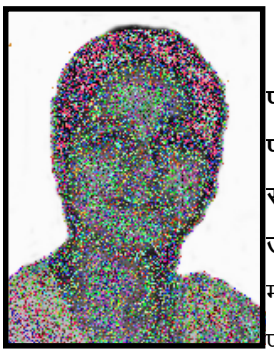

परमेश्वर के कार्य को परमेश्वर के तरीके से परमेश्वर के समय से और सामर्थ से करेंगे तभी देखेंगे जागृति। प्रभु यीशु स्वर्ग की महिमा को छोड़कर इस पृथ्वी पर आये साढ़े तीन साल तक दिन और रात अपने बारह चेलों के साथ रहें, उन्हें शिक्षा देते रहें, उन्हें अपने आने और अपने साथ लेने और चेला बनाने के उद्धेश्य को बताते रहे। ''यीशु के दुःख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आपको (चेलों को) जीवित दिखाया और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देते रहे और परमेश्वर के राज्य की बातें करते रहे और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी **''कि यरूशलेम को न छोड़ो परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाँट जोहते रहो जिसकी चर्चा तुम मुझसे सुन चुके हो''** (प्रेरितों के काम 1:3–4) ।

यहाँ पर प्रभु अपने आने के कार्य को पूरा करते हुये दिख रहे हैं, चेलों को अन्तिम बाय–बाय करते दिख रहे हैं। परन्तु इसी पहले अध्याय की छठी आयत चौका देने वाली है **''सो उन्होंने** (चेलो ने) **इकट्ठे होकर उससे पूछा कि हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्त्राएल को राज्य फेर देगा?''** ऐसा लगता है चेले यहाँ यीशु से पूछ रहे है कि क्या आप रोमी सरकार से इस्त्रायल को छुटकारा दिलाकर अपनी अलग सरकार बनाकर हमें स्वतंत्र करा देगें । जिस प्रकार से भारत बहुत वर्षों तक अंग्रेजों के अधीन रहा और महात्मा गाँधी जैसे लोगों ने हमें आजादी दिलाई। उसी प्रकार से इस्त्राएल के ऊपर रोमी सरकार का राज्य था और वह उनसे छुटकारा चाहते थे। कई बार वे आपस में इस बात की चर्चा किया करते थे । एक बार तो दो चेलों की माँ ने यीशु को कहा ''आज्ञा दे कि तेरे राज्य में मेरे ये दोनों पुत्र एक तेरे दाहिने और एक तेरे बाएँ बैठे।'' इस पर यीशु ने कहा, जो कोई तुममें से बड़ा बनना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने और जो तुम में से प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने, जिस प्रकार मनुष्य का पुत्र भी अपनी सेवा–टहल कराने नहीं वरन् सेवा करने और बहुतों के छुटकारे के मूल्य में अपना प्राण देने आया'' (मत्ती 20:20–28)।

सच कहा जाये तो यहूदा इस्करियोती इसीलिये यीशु के पीछे हो लिया था कि जब यीशु इस्त्राएल का राज्य लौटा लेगा अपनी एक अलग सरकार बनायेगा तो मुझे भी कोई पद्वी मिल जायेगी, परन्तु यीशु तो हर समय स्वर्ग के राज्य की बातें करते थे जो उसकी समझ में नहीं आई और केवल चालीस चाँदी के सिक्कों में यीशु को पकड़वाने वाला बन गया।

दूसरे चेले भी कुछ इसी प्रकार से इकट्ठा होकर (प्रेरितों के काम 1:6) पूछ रहे हैं जबकि यीशु साढ़े तीन वर्ष से चेलों को अपने आने का, और उन्हें अपने पीछे आने के निमन्त्रण के उद्देश्य को बताते आ रहे हैं। (मरकुस 1: 16–18) **''यीशु ने उनसे कहा मेरे पीछे चले आओ; मैं तुमको मनुष्यों के मछुए बनाऊँगा।''** और जीवित होने पर चालीस दिन तक यीशु अपने चेलों से कहता रहा कि यदि तुम मुझे प्रेम करते हो तो मेरी भेड़ों को चराओ, मेरे मेमनों की रखवाली करो। अर्थात मैं जिस काम के लिये आया हुँ वह करो, परन्तु उन्हें उस बड़ी बुलाहट के बारे में कुछ भी समझ नहीं आया।

यह बात यीशु जानते थे कि जब तक पिता पवित्र आत्मा को नहीं भेजेंगे तब तक उन्हें कुछ समझ नहीं आयेगा। इसलिये यीशु प्रेरितों के काम 1:8 में फिर कहते हैं **''परन्तु जब पवित्र–आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।**

यह सामर्थ क्या है ? यही है वह अभिषेक जिसमें सामर्थ है। यह सामर्थ जो संसार की किसी भी शक्ति से बढ़कर है, जो आकाश व पृथ्वी को अस्तित्व में लाई है। यह वह सामर्थ है जिसने मनुष्य की सृष्टि की, यह वह सामर्थ है जिसने यीशु को मृतकों में से जिलाया। यह वह सामर्थ है जो आज भी अन्धों की आँखें, लंगड़ों की टाँगे ठीक कर देती है और मृतकों को जीवित कर सकती है। यह वह सामर्थ है जो हर प्रकार के बन्धनों, दुष्टात्माओं से छुटकारा देकर मनुष्यों को परमेश्वर के निकट ला सकती है।

प्रभु के एक दास को एक परिवार ने खाने पर बुलाया। चलने से पहले प्रभु के दास ने पवित्र आत्मा की अगुवाई पाकर उस घर की स्त्री के लिये प्रार्थना की, कि ''हे प्रभु आप इस बहन को ठीक एक साल बाद एक बेटा देंगे मैं धन्यवाद देता हूँ। '' प्रार्थना समाप्त होते ही पति ने कहा आपने असम्भव बात के लिये प्रार्थना कर दी क्योंकि मेरी पत्नी के बच्चेदानी ही नहीं है तो बच्चा कहाँ से होगा ? ''प्रभु के सेवक ने कहा यदि प्रभु कुछ नहीं से सारी सृष्टि की रचना कर सकता है तो उसके लिये एक नई बच्चेदानी देना कठिन नही है। प्रभु का धन्यवाद हो ठीक एक वर्ष के बाद उस बहन को एक प्यारा बेटा पैदा हुआ।

क्या आप परमेश्वर के द्वारा उसकी सामर्थ से परिपूर्ण होना चाहते हैं ? क्या आप प्रार्थना कर रहे हैं कि ''प्रभु आप अपनी महिमा के लिये मुझे अद्‌भुत रीति से प्रयोग करें'' तब आपको परमेश्वर के अभिषेक की आवश्यकता है। अभिषेक परमेश्वर की उपस्थिति से कहीं आगे की बात है। मैं अन्य भाषा में बोलने, दर्शनों को देखना आदि से कहीं अधिक भारी जिम्मेदारी की बात कर रही हूँ।

उसकी उपस्थिति आपकी हो सकती है और बिना परमेश्वर की सेवकाई के भी आप उसके साथ नियमित संगति रख सकते है उसे प्रेम कर सकते हैं। परन्तु जिस क्षण आप प्रभु की सेवा करना चाहते हैं लोगों को प्रभु के राज्य की बात करके उन्हें प्रभु के राज्य में लाना चाहते हैं। उस समय आपको नर्क की शक्तियों से लड़ने के लिये परमेश्वर का अभिषेक चाहिये।

सत्ताईस साल से मैं प्रभु की सेवा में हूँ बहुत से उतार चढ़ाव आये। चार मुख्य बातें जो प्रभु ने मुझे इन वर्षों में सिखाई हैं। उन्हें मैं आपके साथ इस पुस्तक के माध्यम से बताना चाहती हूँ। इसे मैंने **''अभिषेक की चार कुंजियाँ''** का नाम दिया है। जो भजन संहिता 91 में पाई जाती है।

''जो परम प्रधान की शरण में वास करता है वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा। मैं यहोवा के विषय कहूँगा वह मेरा शरणस्थान और मेरा दृढ़ गढ़ है; वह मेरा परमेश्वर है जिस पर मैं भरोसा रखता हूँ। क्योंकि वही तुझे बहेलिए के जाल से और महामारी से बचाता है। वह अपने पंखों से तुझे ढाप लेगा। और उसके पैरों तले तू शरण लेगा। उसकी सच्चाई ढ़ाल और झिलम है। तू न रात के आतंक से और न दिन के उड़ते तीर से भयभीत होगा। न उस महामारी से जो अन्धकार में फैलती। और न उस विनाश से जो दोपहर में उजाड़ता है। तेरे निकट हजार और तेरे दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे। परन्तु वह तेरे पास न आएगा। परन्तु तू अपनी

आँखों से दृष्टि करेगा। और दुष्टों का अन्त देखेगा। हे यहोवा तू मेरा शरण स्थान ठहरा है। तूने जो परम प्रधान को अपना निवास स्थान बनाया है। इसलिए न कोई विपत्ति तुझ पर आएगी, न कोई दुख तेरे डेरे के निकट आने पाएगा। क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे विषय में आज्ञा देगा। कि वे तेरे सब मागों में तेरी रक्षा करें। वे तुझे हाथों–हाथ उठा लेंगे। ऐसा न हो तेरे पैर में पत्थर से ठेस लगे। तू सिंह और नाग को कुचलेगा। जवान सिंह और अजगर को तू रौंदेगा। उसने मुझसे प्रेम किया है इसलिए मैं उसे छुड़ाऊँगा। मैं उसे ऊँचे स्थान पर सुरक्षित रखूँगा। क्योंकि उसने मेरा नाम जान लिया है जब वह मुझे पुकारेगा तब मैं उसे उत्तर दूँगा। संकट के समय मैं उसके साथ रहूँगा मैं उसे छुड़ाऊँगा और उसका सम्मान बढ़ाऊँगा। मैं उसे दीर्घायु से तृप्त करूँगा। और अपने उद्धार का दर्शन कराऊँगा।"

पहली कुंजी – वास करने की कुंजी

दूसरी कुंजी – कहने (अंगीकार करने) की कुंजी

तीसरी कुंजी – कुचलने और रौंदने की कुंजी

चौथी कुंजी – प्रेम करने की कुंजी

पहली कुंजी

वास करने की कुंजी

जो परम प्रधान की शरण में वास करता है वह सर्वशाक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा''। (भजन संहिता 91:1) सबसे पहली या प्रमुख कुंजी यही है कि हम परमेश्वर की लगातार उपस्थित में रहें क्योंकि परमेश्वर भी यही चाहता है। जबसे परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की उसकी इच्छा थी कि वह मनुष्य के साथ संगति करे,, उससे बातें करें,, अपनी बातें उसे बताये और उसकी बातें सुने। मनुष्य पाप करके जब उससे दूर हो गया फिर भी वह अपने तरीके निकालता रहा, कि किस प्रकार से मनुष्य उसकी उपस्थिति में रहें।

इसका अच्छा उदाहरण हम निर्गमन 25:8 में देखते हैं यहोवा मूसा से कहता है **''वे मेरे लिए एक पवित्र स्थान बनाएं कि मैं उनके बीच निवास करूँ''** इस निवास स्थान का वह पूरा नक्शा मूसा को देता है जिसका नाम ''मिलाप वाला तम्बू'' है इस तम्बू में प्रभु ने मुझे सात कमरे दिखाएं हैं जिनसे होते हुए हम उस महापवित्र उपस्थिति में प्रवेश कर सकते है। क्या आप मेरे साथ उस उपस्थिति में प्रवेश करना चाहते हैं ?आइए हम इन सातों कमरों में बारी –बारी से प्रवेश करते हुए परमेश्वर की महान उपस्थिति में प्रवेश करें जो कि अभिषेक पाने की पहली कुंजी है।

''मिलाप वाले तम्बू '' का उद्धेश्यः–

मिलाप वाले तम्बू का एक ही उद्देश्य था कि परमेश्वर मनुष्य के बीच में रहना चाहता है। मनुष्य चाहे कितना ही निर्बल क्यों न हो गया परन्तु परमेश्वर उनके साथ संगति करना चाहता है। मूसा के मिलाप वाले तम्बू के आधार पर हम परमेश्वर के इस उद्देश्य को तीन भागों या तीन कालों (समयों) में बाँटेंगे।

1. मूसा से यीशु मसीह तक इस तम्बू ने परमेश्वर के साथ मनुष्य की संगति के उद्देश्य को कैसे पूरा किया।

2. इस तम्बू के माध्यम से हम देखेंगे कि यीशु मसीह के आने के द्वारा परमेश्वर के मनुष्य के साथ संगति का यह उद्देश्य कैसे पूरा हुआ।

3. हमारे जीवन में परमेश्वर की संगति का उद्देश्य कैसे पूरा होगा।

'मिलाप वाले तम्बू' के माध्यम से इन सातों कमरों को समझते हुए उस महान परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने से पहले आईए हम इस तम्बू के बाड़े पर एक नजर डाले जो हमें एक संदेश दे रहा है।

बाड़ाः–

निर्गमन 27:9,12 के अनुसार करीब 90 फीट चौड़ा

और 180 फीट लम्बा है। जो सूक्ष्म सनी के कपड़े के पर्दो से बना हुआ था। देखने में न तो आकर्षक था और न ही मजबूत, परन्तु उसमें अन्दर जाने वालों के लिये बहुत ही बड़ी आशीष का कारण था।

मसीह यीशु का जीवन यदि हम देखें तो वह बहुत धनी सम्पन्न परिवार में व्यतीत नहीं हुआ। यशायाह 53:2–3 **''क्योंकि वह उसके सामने कोमल अंकुर के समान और सूखी भूमि से निकली जड़ के समान उगा, उनमें न रूप था, न सौंदर्य की हम उसे देखते और न ही उसका स्वरूप ऐसा था कि हम उसको चाहते। वह तुच्छ जाना गया और मनुष्यों का त्यागा हुआ था । वह दुखी पुरूष था और रोग से उसकी जान – पहचान थी। वह ऐसे मनुष्य के समान तुच्छ जाना गया जिससे लोग मुख फेर लेते है और हमने उसका मूल्य न जाना''।**

आज भी ''क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है परन्तु हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है'' 1 कुरिन्थियों 1:18

उन्नीस साल मैं और मेरे पति विद्यार्थियों के बीच प्रभु यीशु के सुसमाचार को पहुँचाते रहे। एक मसीही परिवार का बेटा हमारे सम्पर्क में आया और उसने प्रभु यीशु को ग्रहण किया और प्रभु की उपस्थिति में आगे बढ़ता गया और अन्य विद्यार्थियों में यीशु की शान्ति की चर्चा करने लगा। एक दिन उस विद्यार्थी की माँ जो मसीही थी हमें मिली और हम पर बहुत गुस्सा किया और कहा क्या आप हमारे बेटे को पादरी बनाना चाहते हैं ? अभी तो उसके आनन्द और मजा करने के दिन है। पता नहीं इसे क्या हो गया है, न यह पिक्चर देखता है, हर समय धार्मिक किताबें और बाईबल पढ़ता रहता है। मेहरबानी से उसे आप अपनी कोई मीटिंग में आने के लिये न कहें और आज से मैं भी उसे आपके साथ सम्बन्ध रखने के लिये मना करूँगी। उस दिन से उस जवान बच्चे ने हमारी संगति छोड़ दी परन्तु करीब चार–पांच साल के बाद हमें उसके बारे में पता चला कि वह नशीली दवाईयों का सेवन करने लगा और विनाश के रास्ते पर चल दिया। वही आज्ञाकारी बेटा अपनी माँ के लिये समस्या बन गया।

प्रियों यह केवल मैंने आपको एक उदाहरण दिया है बहुत से जवान बच्चों की यही कहानी मेरे अन्दर दफन है। जिनके माता–पिता और वह भी मसीही माता – पिता के क्रूस की कथा को , मसीही जीवन को तुच्छ जाना और स्वंय अपने बच्चों को विनाश के रास्ते पर ले गये। परन्तु उद्धार पाने वालों के लिये क्रूस की कथा (मसीही जीवन) परमेश्वर की सामर्थ है। जिसमें असम्भव से सम्भव करने की सामर्थ है। भले ही देखने में मसीही जीवन बहुत निर्बल, निर्धन लगे परन्तु इसमें कुछ ना से कुछ बनाने की सामर्थ है और दूसरों को धनी बनाने की योग्यता है।

(पृष्ठ संख्या 6 का शेष भाग - **चिन्ताओं पर विजय**)

स्थान नहीं है। मनुष्य की अगुवाई असफल हो सकती है। परन्तु पवित्र आत्मा की अगुवाई कभी भी असफल नहीं होती। क्योंकि केवल प्रभु ही हमारे भविष्य को जानता है।

प्रिय मित्रों ! यदि आज आप किसी भी प्रकार की चिन्ता से ग्रसित हैं, चाहे वह व्यक्तिगत चिन्ता हो, या पारिवारिक, कलीसियाई हो या सामाजिक, विवाह की चिन्ता हो या नौकरी की, धन की चिन्ता हो या किसी वस्तु की, उपरोक्त पांच बातों पर ध्यान करके प्रभु से प्रार्थना करिये। वह आपको चिन्ताओं पर विजय देगा। प्रभु को स्मरण रखें, और सम्पूर्ण मन से उस पर भरोसा रखें। वह आपके लिये सीधा मार्ग निकालेगा (नीतिवचन 3:5.6)। आमीन ।

बाइबिल और विज्ञान

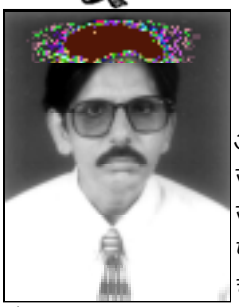

VINCENT CHARLES
M.A., B.Sc., LL.B., N.A.C.(U.S.A.)

पवित्रशास्त्र बाइबिल के अनुसार परमेश्वर ने सृष्टि की रचना 6 दिनों में की थी। इसे सृष्टिवाद (Creation) कहते हैं। परन्तु जब वैज्ञानिको ने (मुख्यता चार्ल्स डार्विन Charles Darwin) नै उन्नीसवीं शताब्दी (Nineteenth Century 1859 A.D) में विकासवाद (Evolution) प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार सृष्टि की रचना खरबो (Billions) वर्षो में हुयी, तब कुछ बाइबिल के विद्धानों ने शीघ्रता में तथा घबराकर तथा विज्ञान के साथ समझौता करते हुए, अपना सिद्धान्त प्रस्तुत किया कि परमेश्वर ने पृथ्वी की रचना 6 दिन में तो की थी, परन्तु यह 6 दिन 24 – 24 घन्टे के न होकर कई अरबो (Millions) वर्षो के रहें होगें। इन विद्धानों का उद्देश्य बाइबिल को गलत सिद्ध करना नहीं था, परन्तु यह वैज्ञानिको को भी नाराज करना नहीं चाहते थे। इसलिये इन्होंने बाइबिल और विज्ञान को लेकर अपना सिद्धांत प्रस्तुत किया, परन्तु इन विद्धानो द्वारा प्रस्तुत यह तर्क पूर्णतय गलत हैं।

वैज्ञानिको द्वारा प्रस्तुत विकासवाद सिर्फ एक परिकल्पना (Hypothesis) है। जिसको वे आज तक प्रमाणित नहीं कर पाये हैं, तथा इस विषय पर स्वंय वैज्ञानिको के विचार भी भिन्न हैं तथा विकासवाद में कई त्रुटियां भी पायी जाती है।

यदि हम मान भी ले, कि यह 6 दिनों का प्रत्येक दिन कई अरब वर्षो का होगा, तब भी यह सम्भव नहीं लगता। क्योंकि परमेश्वर ने पेड़–पौधों को तीसरे दिन तथा सूर्य को चौथे दिन बनाया। अब यदि तीन और चार दिनों के बीच अरबो वर्षो का अन्तर रहा होता, तो क्या पेड़–पौधे बिना सूर्य का प्रकाश प्राप्त किए इतने वर्ष जीवित रह सकते थे ?

आप कह सकते हैं, कि यदि परमेश्वर ने सूर्य को चौथे दिन बनाया तो पहला, दूसरा व तीसरा दिन बिना सूर्य के 24 घन्टे (Solor Day) का कैसे हो सकता है। परन्तु बिना सूर्य के यह तीनो दिन भी 24-24 घन्टे के ही थे, क्योंकि बाइबिल में स्पष्ट लिखा है **"तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहला दिन हो गया"** *(उत्पत्ति 1:5)।* **तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन हो गया** *(उत्पत्ति 1:8)* **तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार तीसरा दिन हो गया** *(उत्पत्ति 1:13)। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने कहा है क्या मेरे लिये कोई भी काम कठिन है (यिर्मयाह 32:27)।*

कुछ व्यक्ति 2 पतरस 3:8, भजन संहिता 90:4 का उल्लेख करते हैं, जहां लिखा है कि परमेश्वर के लिए एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर है।

कुछ व्यक्ति यह भी कहते है कि परमेश्वर ने सृष्टि की रचना 6 दिन में पूरी करने के बाद सातवें दिन विश्राम किया (पढ़े उत्पत्ति 2:3, निर्गमन 22:11; 31:17)। और चूकि यह सांतवा विश्राम का दिन अभी तक चल रहा है, इसलिए बाकी 6 दिन भी 24-24 घन्टे के नहीं हो सकते। परन्तु वह भूल जाते है, कि यहां परमेश्वर के विश्राम करने का वर्णन भूतकाल (Past Tense) में लिखा है न की वर्तमान काल (Present Tense) में है।

वास्तविकता यही है, कि सृष्टि की रचना परमेश्वर ने 6 दिन में की और यह 6 दिन 24-24 घन्टे के ही थे। आप जानते होगें कि पुराना नियम मूल रूप से इब्रानी (Hebrew) भाषा में लिखा गया है। इब्रानी में इन 6 दिनो के लिये Yom का शब्द उपयोग हुआ है जिसका अर्थ "24 घन्टे का दिन" है। जैसे मूसा 40 दिन(Yom) सीनै पर्वत पर रहा तथा योना 3 दिन (Yom) मछली के पेट में रहा आदि। लगभग 700 बार पुराने नियम में Yom शब्द का उपयोग हुआ है तथा प्रत्येक बार इसका अर्थ 24 घन्टे के दिन के लिये हुआ है।

इस सिद्धान्त को प्रभावरहित होते देखकर इन विद्धानो ने दूसरा तर्क भी प्रस्तुत किया, कि परमेश्वर ने उत्पत्ति 1:1 के अनुसार स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की थी, परन्तु उत्पत्ति 1:1 और 1:2 के मध्य अरबो वर्षो का अन्तर है तथा इस अन्तर में परमेश्वर ने एक बड़ा न्याय (Judgement) भी किया था। इस न्याय में परमेश्वर ने शैतान व उसके दूतो को दंड दिया था, और वे सब स्वर्ग से इस पृथ्वी पर गिराये गये थे। अर्थात परमेश्वर

ने शैतान और उसके दूतो के पाप का दंड इस पृथ्वी को भी दिया, और उस समय जो भी जीव–जन्तु इस पृथ्वी पर पाये जाते थे वह सब मारे गये, और आज जो भी उनके अवशेष (Fossils) पाये जाते है, वह इसी सृष्टि के हैं। फिर परमेश्वर ने पुनः एक दूसरी सृष्टि की रचना उत्पत्ति 1:2 के अनुसार 6 दिनों में की। इस तरह इन विद्धानो ने बाइबिल और विज्ञान में एक और समझौता किया। बाइबिल भी सत्य और वैज्ञानिक भी प्रसन्न। परन्तु यह तर्क भी पूर्णतया गलत है, क्योंकि यह बाइबिल के इस विशेष पद को नजर अदांज करता है– **इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गयी, इसलिए कि सबने पाप किया** (रोमियों 5:12)। अर्थात इस संसार में मृत्यु (मनुष्य तथा जीव–जन्तुओं सभी के लिये) आदम के पाप के कारण आयी (शैतान व उसके दूतो के पाप के कारण नहीं)। 1 कुरिन्थियों 15:45 में **ऐसा लिखा भी है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम जीवित प्राणी बना** अर्थात पहला मनुष्य जो परमेश्वर ने बनाया वह आदम ही था। रोमियों 6:23 में लिखा है **क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है** अर्थात मृत्यु पाप के कारण आयी, और यह पाप आदम के कारण आया। आदम के पाप करने से पहले इस संसार में मृत्यु नहीं थी। जब परमेश्वर ने सृष्टि की रचना की थी, तो सब कुछ बहुत अच्छा था, न पाप था और न मृत्यु थी – **"तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है** (उत्पत्ति 1:31)"।

बाइबिल परमेश्वर का जीवित वचन है। अतः इसमें लिखा प्रत्येक वचन सत्य हैं। 2 तीमुथियुस 3:16 में लिखा है **"हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है"**। विज्ञान कहता है कि सृष्टि की रचना खरबो वर्षो में हुयी परन्तु बाइबिल कहती है, कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने सृष्टि की रचना 6 दिन में की थी। वह समय जल्द आएगा, जब वैज्ञानिको को बाइबिल के कथन पर ही विश्वास करना पड़ेगा। याद रखिये, विज्ञान बाइबिल को सही प्रमाणित करता है, खण्डन नहीं करता। **प्रभु यीशु ने कहा है आकाश और पृथ्वी टल जायेगें, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेगी** (लूका 21:33)।

क्या आप जानते है, कि पहले वैज्ञानिको का मानना था कि तारो की संख्या बहुत कम है यहां तक कि Hipparchus in 161-126 B.C. में तारों की संख्या 1080 बतायी इसके लगभग 300 वर्ष बाद Ptolemy ने 1056 बतायी, 1056 A.D. में Kepler ने 1005 बतायी। जब गलीलियो (Galileo) ने 17th शताब्दी में दूरबीन (Telescope) का अविष्कार किया, तभी वैज्ञानिक जान सके, कि तारो की संख्या अनगिनित है। परन्तु आश्चर्य है कि आज से लगभग 3800 पूर्व ही बाइबिल में बता दिया गया था कि तारो की संख्या अनगिनत है **"और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण और समुन्द्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूंगा"** (उत्पत्ति 22:17) तथा **580 BC** में यिर्मयाह नबी ने भी बता दिया था, कि **"आकाश की सेना (Star) की गिनती और समुन्द्र की बालू के किनकों का परिमाण नहीं हो सकता"** (यिर्मयाह 33:22)। उसी तरह वैज्ञानिक मानते थे कि पृथ्वी चपटी है, परन्तु इन वैज्ञानिको को 1519 AD में ही मालूम हो पाया, कि पृथ्वी गोल है। परन्तु यशायाह नबी ने 700BC में ही बता दिया था कि पृथ्वी गोल है। **"यह वह है जो पृथ्वी के घेरे के ऊपर आकाशमण्डल पर विराजमान है"** (यशायाह 40:22) घेरे का अग्रेंजी में अनुवाद Circle है जो कि गोले को बताता है।

ऐसे और भी बहुत से उदाहरण है, जो दिये जा सकते हैं।

वास्तविकता यही है कि बाइबिल को विज्ञान के अनुसार नहीं होना है, परन्तु विज्ञान को बाइबिल के अनुसार होना है।

यशायाह 40:8 में लिखा है **"घास तो सूख जाती और फूल मुर्झा जाता है परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा"**। आमीन।

INFORMATION

Dear Readers,

This magazine includes May-June & July-August 2006 issues and contains 32 pages. Our next issue (September-October) will be the first issue of the 5th Anniversary. You may send your articles, testimonies, poems, appreciation letters etc. along with your latest photograph.

यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा

(भजन संहिता 121:7)

ROMILA BOSE
USA

मेरे प्रियजनो;

प्रभु ने मुझे पुनः प्रेरित किया कि उसके 'वचन' को आप में बांट सकूँ। जो प्रभु मुझे अपने 'वचन' के द्वारा सिखाता है वही मेरे जीवन का बोझ हो जाता है कि अपने प्रिय भाई बहनों में इस सच्चाई को प्रचार करूं और आप जो अपने जीवन में टूट चुके है, दुखों में है, कहीं कोई सहारा नहीं, निराशा का घोर अंधकार है। वहीं इस सच्चाई का प्रकाश फैला दूं और आप पुनः प्रभु के वचन द्वारा बलवन्त हो जाएं और आप का जीवन प्रभु द्वारा दी हुई शान्ति और उस के महान प्रेम में नवीन हो जाएं। मेरे भी जीवन में बहुत से दुख व क्लेश आते है जो केवल अपने ही तक सीमित रहते है मैं भी घोर निराशा, भय के अंधकार में डूब जाती हूँ, प्रभु का आत्मा विश्वास दिलाता है **"यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा"** और यही वचन मेरा 'बल' हो जाता है और यहोवा उचित समय पर उस विपत्ति से मेरी 'रक्षा' करता है, जीवन में ऐसी बहुत सी गवाहियां है जो प्रभु के इस वचन की सच्चाई को प्रकट करती है। इसलिए प्रभु की आत्मा की प्रेरणा से आप को भी प्रेरित कर रही हूँ कि इस वचन को सदा आप अपने हृदय में, प्रार्थना में दोहराते रहे और मैं पूर्ण विश्वास से कहती हूँ, प्रभु आप की रक्षा करेगा। कुछ ऐसे दुख है जो प्रत्येक भाई/बहन के जीवनों में आते रहते है परन्तु आप का विश्वास और प्रभु के वचन की सामर्थ आप की सदा रक्षा करेगी **"तू मेरी आड़ और ढाल है; मेरी आशा तेरे वचन पर है** भजन संहिता 119:114।

(1) जीवन में दुख : हमारे जीवन इन दुखों व विपत्तियों से भरे रहते है और समय–समय पर हम इन दुखों के बीच भयभीत हो उठते हैः जैसे मौत, बिमारियाँ परिक्षाएँ जीवन में अकेलापन, सफर में, परदेश में होना प्रियजनों से बिछुड़ना आदि। इन दुखों से हम टूट जाते है, यह दुख हमारे जीवन को खोखला बना देते है, हमारे जीवन में प्रभु के आनन्द का कोई महत्व नहीं रहता, हम इधर उधर ताकते है, निराशा ही हाथ आती है, अपने प्रिय जन भी दूर हो जाते है, और हम दिन प्रतिदिन निराशा के गर्त में गिरते चले जाते है और हमारा जीवन इन दुखों व विपित्तियों में सिमट कर रह जाता है। आप इतना कुछ सह रहे है? क्यों नहीं इस वचन द्वारा पुनः सामर्थ को प्राप्त करे **"हे यहोवा अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल कि मैं जीवित रहूँ और मेरी आशा को न तोड़"** भजन संहिता 119:116।

धर्मी पर बहुत सी विपत्तियां पड़ती तो है परन्तु यहोवा उस को उन सब से मुक्त करता है भजन संहिता 34:19।

(2) परिवार में दुख :– हम एकाकी जीवन में जीते है, या परिवारिक जीवन में । एकाकी जीवन में भिन्न – भिन्न विपत्तियां और दुख आते है और परिवारिक जीवन में और भिन्न – भिन्न दुख और विपत्तियों से हम घिर जाते है और इसीलिए हमारे प्रियजन, हमारे परिवार हमारी सन्तान टूटते और बिखरते चले जाते है। और यह दुख है – सदस्यों में तनाव व झगड़े, बच्चों की शिक्षा व विवाह के लिए चिन्तित होना, कर्ज में डूबने का दुख

,परिवार के किसी सदस्य की बिमारी व आपरेश्न जैसे घोर विपत्ति को सहना किसी कारण वश अपने प्रियजनों व घर के सदस्यों से दूर हो जाना आदि ऐसे परिवारिक जीवन में बहुत से दुख है जो मेरे और आपके जीवन में आते रहते है आप ही नही मैं भी टूट जाती हूँ और मेरी आँखो से आंसू बहने लगते है, जरूर आप की आंखे भी नम हो जाती होगीं क्योंकि हम मनुष्य है और हमें इन दुखों का सामना करना ही हैं।

मेरे प्रियजनों निराश न हो जैसे मैं प्रभु के वचन को दावे और ह्रदय की गहराई व विश्वास से बोलती हूँ न केवल अपने लिए परन्तु प्रार्थना में यह मांगती हूँ, मेरे जैसे और भी भाई बहन इन दुखों को सह रहे हैं, उन की भी सहायता कीजिए। और अब आप भी इन वचनों को बड़े विश्वास से बोलें क्योंकि यह सांसारिक दुख एकाकी जीवन के दुखों व परिवारिक दुखों से केवल एकमात्र उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु व परमेश्वर पिता ही हमारी रक्षा करता है। क्योंकि यह दुख शैतान की एकचाल है जो हमारे जीवनों को तोड़ देती है परन्तु हमें टूटना नहीं है प्रभु का वचन हमें याद दिलाता है। **''शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पावों से शीघ्र कुचलवा देगा।** (रोमियों 16:20) **वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है; ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता हैं उन्हें भी शान्ति दे सकें जो किसी प्रकार के क्लेश में हों''** (2 कुरिन्थियों 1:4)।

मुझे विश्वास है, इस लेख के द्वारा जो भाई– बहन किसी भी प्रकार के दुखों में है, वह विश्वास करें कि प्रभु का वचन सत्य व दृढ़ है, जैसे वह मेरे दुखों में मेरी सहायता करता है, मुझे बल व ढ़ाढस देता है, मेरे आसुंओं को पोछता है, वैसे ही वह आप को भी बल देगा, दृढ़ करेगा और आपके आसुओं को पोछ़ कर खुशी देगा और आप का जीवन भी प्रभु के आनन्द में डूब जायेगा।

शर्त बस यही है आप भी मेरी तरह विश्वास से कहें– **''यहोवा सारी विपत्ति से मेरी रक्षा करेगा''।**

e l hgh xhr

KANCHAN SRIVASTAVA
Deoria

यीशु तारनहार है, यीशु पालनहार है,
प्यारे प्रभु यीशु पे, दिल जाँ निसार है।

अन्धे को दी आँखें, कोढ़ी को चंगा किया,
मुर्दे को जिन्दा किया, उसकी महिमा अपरम्पार है।

यीशु जीवन की रोटी , यीशु जगत की ज्योति,
यीशु जग का त्राता, यीशु जीवन का आधार है।

सच्ची राह दिखाता, प्रभु की चाह बढ़ाता
सबसे प्यारा, सबसे न्यारा, 'आत्मिक सफर' परिवार है।

Always remember to forget the troubles that passed away. But never forget to remember the blessings that came each day.

महिला जगत

प्रसन्नता का रहस्य

Evelyn Silas
Gorakhpur

मुझे Dr. Billy Graham की लिखी पुस्तक प्रसन्नता की खोज मिली। उसे पढ़ने से मुझे बहुत आशीष मिली तो बहनों मैं ने सोचा वही आशीष मैं आप लोगों के साथ भी बाँटू।

प्रभु यीशु ने प्रसन्नता का रहस्य पहाड़ी उपदेश में प्रस्तुत किया है। इस समय यीशु मसीह के साथ उसके चेले और भीड़ दोनों प्रकार के लोग थे (मत्ती 5:1–2) याने यह उपदेश मसीही और गैर मसीही दोनों के लिये आवश्यक है।

(पद 3) धन्य है वे जो मन के दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है मन के दीन होने का मतलब है,मन का खाली होना या कंगाल हो जाना। आज संसार में मनुष्य का मन हर प्रकार की बुराई से भरा है। हमें अपने मन को इन सब बातों से खाली करना है। ताकि हमारा मन आत्मिक फलों से भर जाए हम धन्य हो सके।

यीशु ने कहा स्वर्ग का अधिकारी होने के लिए हमें बच्चे के समान नादान बनना होगा। बच्चे अपनी देख भाल एवम् सुरक्षा के लिये अपने माता पिता पर निर्भर रहते है, इस का मतलब यह नहीं कि वे बेसहारा या कंगाल हैं। परमेश्वर की संतान होने के नाते हम भी अपने पिता परमेश्वर पर आश्रित हैं। जैसे पिता अपने बच्चों पर दया करता है हमारा स्वर्गीय पिता भी अपने डरवैयों पर दया करता है (भजन संहिता 103:13)। आश्रित बच्चों को किसी बात की चिन्ता नहीं होती, क्योंकि वे जानते है, कि उन की सारी आवश्यकताओं को उन के माता पिता पूरी करेंगे। यीशु ने कहा **तुम चिन्ता करके यह न कहना कि हम क्या खायेंगे या क्या पीयेंगे, पहले तुम उस के राज्य और धर्म की खोज करो तो यह सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी (मत्ती 6:31, 33)।** बच्चे अपने माता पिता से सहायता मांगने में कभी नहीं झिझकते। यीशु ने कहा **आओ हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांध कर चलें कि हम पर दया हो और वे अनुग्रह पायें, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करें। (इब्रानियों 4:16)**

इसके लिये हमें अपने मन की दीन दशा को पहचानना है। शिमशोन परमेश्वर का नजीर था उसका जन्म परमेश्वर की योजना अनुसार हुआ (न्यायियों 3:7) परमेश्वर की सामर्थ उस के साथ थी (न्यायियों 4,26,19, 15:16) पर जब वह संसार की ओर खिंच गया, दलीला के प्रेम जाल में फंस गया (न्यायियों 16:4, 17) उसे पता ही नहीं चला उसके पास से परमेश्वर की सामर्थ चली गई, वह शक्तिशाली सामर्थी पुरूष कमजोर हो गया उसकी आंखे फोड़ दी गई, वह बन्दी बना लिया गया, जो लोग उस से ड़रते थे उनके सामने तमाशा बन गया (न्यायियों 16:20–27)। पर जब उसने अपनी दीन हीन दशा को पहचाना उसने परमेश्वर से फिर से सामर्थ मांगी परमेश्वर ने उसे सामर्थ दी और उसने बहुत से पलिशित्तयों को मारा। आज समय है हम अपनी दीन हीन दशा को पहचाने अपने मनों को सांसरिक बातों से खाली करे ताकि परमेश्वर की आशीषों से हमारे मन भर जाये हमारा जीवन धन्य हो जायें। (पद 4) – **धन्य है जो शोक करते है क्योंकि वे शान्ति पायेंगे।** शोक

का मतलब है दुख। परमेश्वर कभी नही चाहता हम दुखी हो । यीशु मसीह तो हमें अनन्त जीवन देने आया। फिर यहां यीशु कैसे शोक की बात कर रहा है।

1. **अयोग्यता का शोक** – हमें अपने पापी स्वभाव के लिये शोक करना है। **सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है (रोमियों 3:23)।** हमे यशायाह के समान अपनी पापी दशा पर शोक करना है **(यशायाह 6:5)** अपनी पापी दशा को जान लेने के बाद कोई भी शांत नही रह सकता, अपने धुटनों पर आकर आसू बहाता है और शोकित होता है, ताकि पापों की क्षमा प्राप्त कर के शान्ति पा सकें। **(यशायाह 43:25)।** यहोवा टूटे मन वालों के पास आता है। और पिसे हुओं का उद्धार करता है **(भजन संहिता 34:18)।** हमें आंसुओं और उपवास के साथ प्रभु के चरणों मे आना है **(योएल 2:12) (प्रेरितों के कार्य 3:19)।** परमेश्वर कहता है **यदि मेरी प्रजा के लोग दीन होकर प्रार्थना करें तो मैं स्वर्ग मे से सुनकर उनके पाप क्षमा करूंगा (2 इतिहास 7:14)।** हमें केवल पश्चाताप् करना है। परमेश्वर हमारे पाप क्षमा करेगा, हमें नया जीवन देगा। हम धन्य हो जायेंगे।

2. आत्मिक पीड़ा का शोक – उद्धार पाया हुआ मनुष्य दूसरों को पापी दशा में देखकर शोकित होता है। क्योंकि हमारा जीवन परिवर्तन के बाद हमारा मन प्रेम से भर जाता है। परमेश्वर ने हमें आज्ञा भी दी है, **अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो। (लूका 10:27)** पिन्तेकुस्त के दिन तीन हजार लोगेां के कलीसिया मे सम्मिलित होने से पूर्व चेलों ने 10 दिन तक उपवास के साथ प्रार्थना की। **यशायाह 66:8–में लिखा है –सिय्योन की पीड़ाए उठी ही थी कि उन के सन्तान उत्पन्न हो गये** इस पद में मसीही लोगों के मन में होने वाली उन प्रार्थनाओं से मतलब है, जो संसार में ऐसे लोगों के लिये की जा रही है, जिनका आत्मिक जन्म नहीं हुआ है, परमेश्वर चाहता है मसीही लोग संसार के भटके हुए लोगों के लिये चिन्तित हों, और आत्मिक पीड़ा के साथ उनके लिए प्रार्थना करे। संसार में काफी हद तक शान्ति आ जायेगी। **धन्य है वे जो शोक करते है क्योकि वे शान्ति पायेंगे।** आशा है आपको इस लेख से आशीष मिलेगी ।

बाकी अगले अंग मे.....

मुसीबत में ईश्वर ही सहायक होता है

LYRICS BY: SHANON E LYALL
B.A., B.Ed

अपने नही किसी के, न अपना नही कोई
यूँ रिशते जोड़ लेते हैं, दुनियाँ में हर कोई

मुसीबत में ग़ैर होगें पास, अपना नही कोई
वह हर कदम पे होगा साथ, अपना नही कोई

रिशते तो केवल रिशते हैं, देखने के वास्ते
पराये ही काम आयेंगे, अपना नही कोई

अपने तसल्ली देगें, न आयेगे वह करीब
दूसरे सहारा देगें, पर अपना नही कोई

मुसीबत में घर भी भाई के, जाना न तू कभी
नफ़रत दिखा, अनजान बन, होगा नही कोई

दामन खुदा का थाम ले, दुनियाँ को छोड़ कर
फिर उस से बढ़ कर देखने, वाला नही कोई

कार्य की नैतिकता

DR. ALVIN LOW

हममे से कुछ लोग काम करने से बचना चाहतें हैं अथवा कम से कम काम में संलग्न होना चाहते हैं। आइयें देखें कि पवित्रशास्त्र, कार्य करने के विषय में क्या बताता है?

मानव पतन से पूर्व परमेश्वर द्वारा कार्य करना नियुक्त किया गया है। '' यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि उसमे काम करें और उसकी रक्षा करे'' (उत्पत्ति 2:15)। कार्य एक श्राप नही है। जबकि कार्य करना परमेश्वर द्वारा निर्देशित किया गया है अतः धर्मनिरपेक्ष कार्य तथा आत्मिक कार्य में कोई द्विविभाजीकरण नही है। धर्मनिरपेक्ष संसार में भी कार्य करना उतना ही आत्मिक है जितना कलीसिया अथवा किसी मिशनरी संस्था में काम करना। अतः परमेश्वर ने जो काम आपको सौंपा हैं, उसी के लिये आपको रखा है और नियुक्त किया है।

पतन के पश्चात कार्य थकाने वाला बन गया। ''और आदम से उसने कहा, तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना उसको तूने खाया है, इस लिये भूमि तेरे कारण शापित है; तू उसकी उपज जीवन भर दुख के साथ खाया करेगा : और वे तेरे लिये कांटे और ऊंट कटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा; और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अंत मे मिट्टी मे मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी मे से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी मे फिर मिल जाएगा '' (उत्पत्ति 3:17–19)।

कार्य, जीवित रहने के लिये है– उत्पत्ति 3:19 बताता है, '' और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी मे मिल जायेगा ''। इसका अर्थ यह नही है कि आप सेवा निवृत्त नही हो सकते हैं। सम्भवतः सेवा निवृत्त के समय कार्य मे भिन्नता हो सकती है। आपको इस समय भी काम करने की आवश्यकता है क्योंकि स्वय को भला अनुभव करने हेतु काम करना आवश्यक है।

कार्य करना मनोवैज्ञानिक और बौद्धिक रूप से ठीक रहने के लिये आवश्यक है। '' मनुष्य के लिये खाने–पीने और परिश्रम करते हुयें अपने जीवन को सुखी रखने सिवाय और कुछ भी अच्छा नही। मैंने देखा कि यह भी परमेश्वर की ओर से मिलता है '' (सभोपदेशक 2:24)। परमेश्वर चाहता है कि हम अपने काम में सन्तुष्टी प्राप्त करें। हमारे सुखी रहने के लिये, काम करना आवश्यक है।

कार्य परमेश्वर के साधनो मे से एक है जिससे हमारी आवश्यकताओं की पूर्ती होती है– परमेश्वर की इच्छा है कि हम अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये, काम करें। '' पर यदि कोई अपनो की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है '' (1 तीमुथियुस 5:8)। '' ..... कि यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाये'' (1 थिस्सलुनीकियों 3:10)। परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति का एक साधन काम करने के द्वारा है। हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमारे प्रतिदिन का भोजन प्रदान करें (मत्ती 6:11)। यह अनिवार्य है और हम मानते हैं कि अन्त मे परमेश्वर ही है जो हमे साधन प्रदान करता है; परन्तु परमेश्वर यह नही चाहता है कि हम अपना समय बरबाद करते हुये आलस्य से बैठे रहें और बिना कार्य किये हुये स्वर्ग से मन्ना की प्रतिक्षा करें।

परमेश्वर के लिये कार्य करना एक सेवा है– ''सो तुम चाहे खाओ, चाहे पिओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो'' (1 कुरिन्थियों 10:31)।'' और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो '' (कुलूस्सियों 3:17)। ''हे सेवकों जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी है, सब बातों में उनकी आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करने

की नाई दिखाने के लिये नही, परन्तु मन की सिधाई और परमेश्वर के भय से। और जो कुछ तुम करते हो, तन–मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नही परन्तु प्रभु के लिये करते हो क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हे इसके बदले प्रभु से एक मीरास मिलेगी। तुम प्रभु यीशु मसीह की सेवा करते हो। क्योंकि जो बुरा करता है वह अपनी बुराई का फल पायेगा; वहां किसी का पक्षपात नही है'' (कुलु0 3:22–25)। '' और उस सेवा को मनुष्यों की नही परन्तु प्रभु की जानकर सुइच्छा से करो '' (इफिसियो 6:7)।

कार्य करने का भविष्य में प्रतिफल मिलेगा– ''और यदि कोई इस नेव पर सोना या चांदी या बहुमोल पत्थर या काठ या घास या फूंस का रद्दा रखे। तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बतायेगा; इस लिये आग के साथ प्रगट होगा; और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है ? जिस का काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पायेगा। (1 कुरि0 3:12–14)

परमेश्वर कार्यरत है और प्रभु यीशु कार्यरत है– ''इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मेरा पिता अब तक काम करता है, मै भी काम करता हूँ '' (यूहन्ना 5:17)। '' जिसने मुझे भेजा है; हमे उसके काम दिन ही दिन मे करना आवश्यक है; वह रात आने वाली है जिसमे कोई काम नही कर सकता '' (यूहन्ना 9:4)। '' जो काम तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है '' (यूहन्ना 17:4)।

कार्य में मनोवृति

जी हां हमे कार्य करना है। कुछ ऐसे लोग हैं जो काम करने से घबराते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो उचित ठहरने के लिये कम से कम काम करेंगे। हमारे काम में हमारी क्या मनोवृति है ?

 हमे अपने कार्य को प्रयत्न पूर्वक करना है– परमेश्वर के लोगो ने अपने काम को प्रयत्न से पूरा किया था (एज्रा 5:8 ; 6:12,13 ; 7:23)। '' क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं, कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम को भूल जाये जो तुम ने उसके नाम के लिये इस रीति से दिखाया, कि पवित्र लोगों की सेवा की, और कर भी रहे हो पर हम बहुत चाहते हैं कि तुम में से हर एक जन अन्त तक पूरी आशा के लिये ऐसा ही प्रयत्न करता रहें। ताकि तुम आलसी न हो जाओं, वरन उनका अनुकरण करो, जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते है''(इब्रानियों 6:10,12)। हमे परिश्रम पूर्वक कार्य करना हैं चाहे हमारा अधिकारी हमे देख रहा हो, अथवा नही (कुलु0 3:22)। यदि हमसे एक दिन मे आठ घंटे काम की मांग की जाती है तो हमें एक दिन मे कम से कम आठ घंटे देने हैं। (जिसके बीच मे उचित अन्तराल हो)।

 हमे अपना कार्य श्रेष्ठतापूर्वक करना है – जो कुछ भी हम करते हैं उसमे श्रेष्ठता होनी चाहिये (2 कुरि0 8:6)। हमे जल्दबाजी नही करनी है।

 हमे अपना काम सच्चाई के साथ करना है– ''वे मनुष्य सच्चाई से काम करते थे '' (2 इतिहास 34:12); ''..... भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि वह विश्वास योग्य निकले '' (1कुरि0 4:2)। प्रभु ने हमे जिस पदस्थिति में रखा है, हमे विश्वासयोग्य रहना है।

 हमे अपने नियोजको को आदर देना है और उनकी आज्ञा माननी है– '' हे सेवकों, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातो में उनकी आज्ञा का पालन करो'' (कुलु0 3:22)।

 हमे अपने कर्मचारियों से उचित रूप से व्यवहार करना है– '' हे स्वामियों, अपने–अपने दासों के साथ न्याय और ठीक–ठीक व्यवहार करो, क्योंकि तुम जानते हो कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है'' (कुलु0 4:1)।

 हमें अपना काम प्रभु की सेवा के रूप में करना है (1 कुरि0 10:31, कुलु0 3:17)।

कार्य में प्रोन्नति

'' बधाई हो आपकी प्रोन्नति हुयी है'।''– कर्मचारियों के कानो मे यह शब्द संगीत की धुन के समान लगते हैं। जब भी आपकी, आपके काम में प्रोन्नति हो तब याद रखें कि यह प्रोन्नति प्रभु की ओर से है, ''क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न पश्चिम से, और न जंगल की ओर से आती है; परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है, वो एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है '' (भजन संहिता 75:6–7)। हमे प्रोन्नति देने वाला, परमेश्वर है। गर्वपूर्ण स्वंय को ऊँचा उठाने के प्रति सावधान रहें।

हमे स्वंय को महिमा मण्डित करने के लिये प्रोन्नति को नही खोजना चाहिये। '' इसलिये सुन, क्या तू अपने लिये बड़ाई खोज रहा है ? उसे मत खोज ... .'' (यिर्म0 45:5)।

अवकाश तथा अन्तराल

प्रभु यीशु विश्राम करता है। उसने अपने शिष्यों को कहा, '' तुम आप अलग किसी शान्त स्थान में आकर थोड़ा विश्राम करो '' (मरकुस 6:31)। हमारे विश्राम करने का समय होना चाहिये। परमेश्वर ने सातवें दिन विश्राम किया था (उत्पत्ति 2:2)। वह हमसे एक दिन मे 24 घंटे और एक सप्ताह में 7 दिन कार्य में लगे रहने की अपेक्षा नही करता है। इसलिये उसने हमे सब्त का दिन दिया है (निर्गमन 20:8–11)। अवकाश तथा अन्तराल हमे शक्ति हास से बचायेगें, और हमे आवश्यक विश्राम, ताजगी, तनाव मुक्ति तथा चिंतन का समय देंगे।

कुछ मसीही अवकाश, अन्तराल अथवा बहुत ही आवश्यक विश्राम लेने में ग्लानि का अनुभव करते हैं और इसके लिये तर्क देते हैं कि परमेश्वर के लिये बहुत सा काम करने को है, तथा शैतान सदैव सक्रिय रहता है। यह एक यर्थाथ ग्लानि होगी क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से नही आती है। शैतान चाहता है, कि आप काम में लगे रहे कि जल्दी ही शक्तिहीन हो जायें जिससे कि प्रभु के लिये आपकी सेवा अचानक समाप्त हो जाये। यदि हम हमेशा कार्य में व्यस्त रहने वाले व्यक्ति हैं तो हमारी कुशलता कम होगी। हमेशा कार्य में लगे रहने के प्रति सावधान रहें।

एक गैर मसीही नियोक्ता (मालिक) के लिये कार्य करना

हममे से बहुत से लोग गैर मसीही नियोक्ता के लिये काम कर रहें है। जब निम्नलिखित परिस्थितियां आयें तो हमे क्या करना होगा ?

1.नियोक्ता हमसे कुछ ऐसे काम करवाना चाहता है जो पवित्रशास्त्र के विरूद्ध है (जैसे कर बचाने के लिये आर्थिक विवरण में फेर–बदल करना)।

2.नियोक्ता हमे, उसके अन्य धार्मिक उत्सवों मे भाग लेने के लिये कहता है, जो हमारे मसीही विश्वास की भिन्नता में हो। क्या हमे ऐसे उत्सवो में भाग लेना चाहिये ?

पहिली समस्या का समाधान सरल है क्योंकि वह पवित्रशास्त्र के विरोध मे है। आपके पास अवश्य ही ''नही'' कहने का और परिणामो का सामना करने का साहस होना चाहिये। परमेश्वर आपके निर्णय को सम्मान देगा। अपने प्रतिदिन के साधनो के लिये अथवा आपके लिये कोई अन्य नौकरी देने के लिये आपको परमेश्वर पर भरोसा करना होगा।

दूसरी समस्या थोड़ी कठिन है क्योंकि नियोक्ता दावा करता है कि कुछ प्रथाऐं सांस्कृतिक हैं, वे धार्मिक नही हैं। यह जटिलता और बढ़ जाती है क्योंकि यहां संगी–साथियों का दबाव होता है और एक दूसरे को सम्मान देने की आवश्यकता है। प्रायः नियोक्ता द्वारा आमंत्रण, संस्कृति शब्दावली मे व्यक्त किया जाता है परन्तु जब आप उत्सव में पहुंचते हैं तो आप पाते हैं कि उत्सव की कुछ बातें ऐसी होती हैं जिनमे आप सम्मिलित नही हो सकते है। तब आप क्या करेंगे ?

यहां अध्ययन हेतु दानिय्येल का एक अच्छा संदर्भ है :

''परन्तु दानिय्येल ने अपने मन मे ठान लिया कि वे राजा का भोजन खाकर, और उसके पीने का दाखमधु पीकर अपवित्र न होए; इसलिये उसने खोजों के प्रधान से विनती की कि उसे अपवित्र ना होना पड़े। परमेश्वर ने खोजो के प्रधान के मन मे दानिय्येल के प्रति कृपा और दया भर दी। और खोजो के प्रधान ने दानिय्येल से कहा, मैं अपने स्वामी राजा से डरता हूं, क्योंकि तुम्हारा खाना– पीना उसी ने ठहराया है, कहीं ऐसा न हो कि वे तेरे मुंह तेरे संगी के जवानो से उतरा हुआ और उदास देखे और तुम मेरा सिर राजा के साम्हने जोखिम मे डालो। तब दानिय्येल ने उस मुखिये से, जिसको खोजों के प्रधान ने दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह के ऊपर देखभाल करने के लिये नियुक्त था, कहा, मैं तेरी विनती करता हूं, अपने दासों को दस दिन तक जाँच, हमारे खाने के लिये साग–पात और पीने के लिये पानी ही दिया जाये। फिर दस दिन के बाद हमारे मुंह और जो जवान राजा का भोजन खाते हैं उनके मुंह को देख; और जैसा तुझे देख पड़े, उसी के अनुसार अपने दासों से व्यहवार करना। उनकी यह विनती उसने मान ली, और दस दिन तक उनको जाँचता रहा। दस दिन के बाद उनके मुंह राजा के भोजन के खाने वाले सब

जवानो से अधिक अच्छे और चिकने देख पड़े। (दानिय्येल 1:8–15)

यहां ध्यान देने के लिये अनेक सिद्धान्त हमे प्राप्त होते है :

 परमेश्वर को आदर देने का संकल्प लें। दानिय्येल ने स्वंय अशुद्ध न होने का संकल्प लिया था। उसने परमेश्वर को आदर देने के प्रति एक सर्म्पण किया था।

 अपने उच्च अधिकारी के निर्देश का एक सीमा तक सम्मान करें। दानिय्येल ने अपने अधिकारी के प्रति आदर प्रदर्शित किया था। उसने उसके उत्तरदायित्वों को चुनौती नही दी थी। वह उनके निर्देश की सीमा को जानता था।

 एक अन्य समाधान को प्रस्तुत करें। दानिय्येल ने एक भिन्न भोजन साग–पात और पानी का सुझाव दिया था।

 मूल्याकंन के लिये एक तर्क संगत समय सीमा प्रस्तावित करें। दानिय्येल ने 10 दिनो का प्रस्ताव रखा था।

जब आपके नियोक्ता द्वारा आपको गैरमसीही गतिविधियों में सम्मिलित होने के लिये निमंत्रित किया जाता है तो उन कठिन परिस्थिती में उपरोक्त बातें निम्नलिखित रूप में लागू होती हैं :

 परमेश्वर को आदर देने का संकल्प लें – प्रार्थना करें कि, '' मुझे परीक्षा में न पड़ने दे''। अपने नियोक्ता को नौकरी पाने के पहिले अथवा उसके तुरन्त बाद यह जानकारी दें कि आप प्रभु यीशु के अनुयाई हैं, और उस कम्पनी में अपनी जीवन और सेवा से यह प्रदर्शित करें कि आप मालिक के एक विश्वासयोग्य सर्वोत्तम कर्मचारी है। परमेश्वर से यह अपेक्षा न करें कि वह तब भी आपको नौकरी में सम्मान प्रदान करेगा जबकि आप अपने कार्य मे आलस करते हैं।

 अपने नियोक्ता की सीमित निर्देश सीमा का आदर करें। उनके अधिकार को चुनौती न दें।

 एक विकल्पित समाधान प्रस्तुत करें। उत्सव मे न आने की क्षमा प्रार्थना करें, परन्तु अपने नियोक्ता को पहिले से बतायें कि वह आपसे कैसे सर्म्पक कर सकता है अथवा जब दूसरे कर्मचारी उत्सव में आनन्द ले रहें हैं तो आप कम्पनी के अन्य कामों के लिये उपलब्ध हैं।

अपनी कालेज की शिक्षा समाप्त करने के तुरन्त बाद मैंने एक कम्पनी मे प्रबन्ध निर्देशक (एम0 डी0) के सहायक के रूप में काम किया था। मुझे नौकरी देने के तुरन्त बाद मुझसे शनिवार को भी कार्य करने को कहा गया। यह मेरी समय– सारणी के अनुकूल नही था, क्योंकि मुझे एक फैलोशिप में भाग लेना होता था और कलीसियाओं में सन्देश देना होता था। मुझे क्या करना चाहिये ?

मैंने प्रार्थना की और परमेश्वर से बुद्धि देने के लिये कहा। अनेक प्रार्थनाओं के बाद और एक ऐसा समय चुन कर जब अधिकारी अच्छी मनस्थिति में था मैं उसके पास गया और उससे शनिवार को अवकाश की अनुमति मांगी, और फिर उससे कहा, कि यदि शुक्रवार को मेरे योग्य कोई अतिरिक्त कार्य हो, तो मैं उन उत्तरदायित्वों को लेने में आनन्दित हूंगा। वह यह सुन कर खुश हुआ कि मैं उसके हित के लिये सोचता था। इसके अतिरिक्त मैंने अपना टेलीफोन नम्बर उसको दिया कि शनिवार को किसी आपातस्थिति में वह मुझसे सम्पर्क कर सके। यह बात–चीत का एक अन्य सकारात्मक पक्ष था। वह कम्पनी में मेरे कार्य निष्पादन को देख चुका था। परमेश्वर की स्तुति हो कि वह इस कार्य व्यवस्था के प्रति सहमत हो गया। वास्तव मे मैं कम्पनी का पहिला कर्मचारी बना जिसे शनिवार को अवकाश प्राप्त हुआ !

मेरी अगली नौकरी एक नरियल तेल की शोधक कम्पनी में मार्केटिगं एक्सीक्यूटिव के रूप में थी। मेरे निर्धारित कार्यों में से एक काम अमेरिका में ट्रेडिंग बोर्ड के साथ व्यापार करना था, परन्तु यह काम शाम को किया जाना होता था क्योंकि जब मैं मलेशिया मे था तो इसी समय अमेरिका में ट्रेडिंग बोर्ड खुला होता था। यहां फिर वही समस्या थी कि मुझे शाम को कलीसियाओं में बोलना होता था तथा यूथ फैलोशिप में सेवकाई करनी होती थी। मुझे क्या करना चाहिये ?

मैंने प्रार्थना की, कि मेरा मार्केटिगं डायरेक्टर (एक गैर मसीही) मुझे इस उत्तरदायित्व से मुक्त करने के लिये कृपालु हो जाये और मुझे शाम को काम करने

की आवश्यकता न पड़े। बहुत सी प्रार्थना के पश्चात मैं अपने अधिकारी के पास गया और उससे अपनी इन दुविधा के लिये बताया। उसने मेरी इस सहभागिता करने की सराहना की और मुझसे कहा कि संयोग से उसे बाजार की सांख्यकी की देखभाल करने के लिये किसी की आवश्यकता थी और इसके लिये शाम को कार्य करना आवश्यक नही था। हाल्लिूय्याह ! अन्य सभी मार्केटिंग एक्सीक्यूटिव शाम को काम करते थे, परन्तु मैं दिन मे काम कर रहा था।

मार्केटिंग डायरेक्टर ने मुझे '' प्रीचर बॉय'' (युवा उपदेशक) कह कर बुलाना भी प्रारम्भ कर दिया। उस समय मै युवा था। मैंने मजाक में उससे कहा, कि एक दिन वह भी ''प्रीचर बॉय'' होगा। वह जानता था कि मैं प्रभु यीशु का अनुयाई हूं। और जब कम्पनी ने मेरे लिये एक विदाई उत्सव किया क्योंकि मैं धर्मविज्ञान के अध्ययन के लिये नौकरी छोड़ कर अमेरिका जा रहा था तो उन्होने उसमे मदिरा नही परोसी। जब मैंने डायरेक्टर से पूछा कि वह क्यों मदिरा नही पी रहा था, तो उसका उत्तर था कि वह ''प्रीचर बॉय'' को आदर देना चाहता था। हम उसके लिये दस वर्षो तक प्रार्थना करते रहे और परमेश्वर, अद्भुत रूप से उसे प्रभु यीशु के पास ले आया। फिर उसने प्रभु यीशु के प्रति अपनी पत्नी की अगुवाई की और अब वह और उसका परिवार प्रभु की सेवा मे संलग्न है। परमेश्वर अद्भुत है।

जब हम परमेश्वर को आदर देने के प्रति सर्मपित होते हैं तब वह आर्श्चयकर्म करता है। उस पर भरोसा रखें।

Aatmik Safar

(Spiritual journey)

* An Interdenominational complete Christian family magazine (bi-monthly).
* A must for joyous life and spiritual growth.
* Contains inspiring articles, testimonies and experiences necessary for leading a good spiritual journey.
* The cause of success behind this magazine - Prayers.
* Published by Trinity Church, Lucknow.

Aatmik Safar

* Reaching the unreached.
* Growing fast.

Our Aim:- To spread the message of Love, Peace & Salvation through the death & resurrection of Jesus Christ - the only Living Saviour

Our Vision:- To make it one of the leading Christian family magazines of India.

Our Prayer:- Lord Jesus give us strength & wisdom, guide & help us through your Holy Spirit in the publication of this magazine. Only the name of Jesus Christ be Glorified & Exalted through this magazine.

Amen.

बाल – जगत

तू कहाँ है ?

PREM ROBINSON

बच्चों और समस्त पाठकों, यह प्रश्न '' तू कहाँ है '' ? किसने और किससे पूछा ? हाँ आपका उत्तर सही है यह प्रश्न परमेश्वर ने आदम से किया था जब वह बाग़ – इ – अदन में प्रति–दिन की तरह आदम से मिलने आया था (पढ़िये उत्पति 2:1–14)।

बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर मनुष्य से बहुत प्रेम करता था और आज भी करता है। परमेश्वर ने मनुष्य को मिट्टी से अपने स्वरूप पर बनाकर उसमे जीवन की श्वांस फूकी, उस समय पाप संसार में नहीं था। मनुष्य परमेश्वर की भांति पवित्र था। जैसा आपने पवित्र शास्त्र (बाइबल) में पढ़ा कि जब आदम हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया उसी समय से पाप संसार में आ गया और तब से लेकर आज तक मनुष्य अपने पापों का फल भोग रहा है। परन्तु परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र प्रभु यीशु मसीह को संसार में भेज कर पापों से मुक्ति का मार्ग खोल दिया और वह पर्दा जो दुष्ट (शैतान अथवा लूसीफर) ने हमारे और परमेश्वर के बीच लगा रखा था फाड़ कर दो भागों में कर दिया ताकि हम उस मार्ग से (अच्छे आचारण के द्वारा) परमेश्वर पिता तक पहुँच सकें। परमेश्वर हमसे हमारे संसारिक माता–पिता से अधिक प्रेम करता है। वह नहीं चाहता कि हम उससे दूर रहे।

दानपुर बस्ती में एक परिवार रहता था । वह पूरा परिवार परमेश्वर से बहुत प्रेम रखता था और उसका भय मानकर अपना जीवन व्यतीत कर रहा था। परमेश्वर की आशीष उस परिवार के प्रत्येक सदस्य पर थी। बच्चे पढ़ने लिखने में बहुत होशियार थे। माता – पिता के रूपये – पैसे पर परमेश्वर की बहुतायत से आशीष थी। बीमारी – दुख उस घर से कोसों दूर रहती थी। प्रभात उस घर का सबसे बड़ा बेटा था । वह परमेश्वर के साथ – साथ अपने माँ – बाप का आज्ञाकारी बेटा था। सब लोग उसे बहुत प्यार करते थे। M.A पास करने के बाद वह फ़ौज में भरती हो गया। धीरे – धीरे उन्नति करते हुए वह एक ऊँचे (कर्नल) पद पर पहुँच गया। सरकार की ओर से उसे सभी प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त थी। सब प्रकार का सांसारिक वैभव पाकर वह परमेश्वर से दूर होने लगा। कुछ वर्षों के बाद शायद वह यह भी भूल गया कि परमेश्वर भी कोई हैं जिसके अनुग्रह से उसने यह (कर्नल) पद पाया है। वह अपने छोटे भाई, बहनों तथा माता – पिता को भी भूलने लगा। जब माता–पिता की ओर से उसे कोई पत्र प्राप्त होता तो उसका उत्तर भी कई महीनों बाद देता था। उसके माता – पिता उसके पत्र का रोज इन्तजार करते थे। प्रभात को शराब के नशे की आदत हो गयी थी। माता – पिता उसको अपने हर पत्र में लिखते बेटा नशे की हर वस्तु से दूर रहना अपने कर्तव्य का पूरी रीति से पालन करना और परमेश्वर को प्रथम स्थान देना, वही तुमको हर संकट से बचायेगा। लेकिन प्रभात के पास परमेश्वर को स्मरण करने का समय ही कहाँ था ?वह तो अपना जीवन जी रहा था। एक रात वह सो रहा था तो उसे एक आवाज सुनाई दी कि प्रभात तू कहाँ है ? वह इस आवाज को सुनकर तुरन्त उठ कर बैठ गया और बत्ती जलाकर इधर –उधर देखने लगा। जब उसे कुछ नहीं दिखाई पड़ा तो वह चुपचाप लेट कर सो गया। कुछ देर बाद उसे वही आवाज फिर सुनाई दी। इस बार भी वह पहले की तरह उठकर सो गया, कुछ देर बाद सोते – सोते उसके मस्तिष्क में यह विचार आया कि मुझे कौन आवाज दे सकता हैं ? कहीं यह परमेश्वर की आवाज़ तो नही थी। लेकिन दुष्ट ने उसके कान में चुपके से कह दिया ''अरे प्रभात किस परमेश्वर के चक्कर में तू पड़ा है ? खा – पी और खुश रह।

अचानक पड़ोसी देश पाकिस्तान ने युद्ध की घोषणा कर दी। प्रभात को बॉर्डर पर जाना पड़ा। एक

दिन वह अपने बंकर में बैठा था कि शत्रु की ओर से चलाया गया एक गोला उसके बंकर पर गिरा और प्रभात का एक पैर धड़ से अलग हो गया और उसके दाहिने हाथ की उंगलियां भी उसके हाथ से अलग हो गयी। प्रभात को अस्पताल में भर्ती किया गया और वहाँ उसका इलाज होने लगा। एक दिन वह पलंग पर लेटा हुआ अपने भावी जीवन के विषय में सोच रहा था कि अब मेरा क्या होगा ? मैं अपाहिज होकर कैसे जीवित रहूंगा? मैं तो अपने माता – पिता पर एक बोझ बना रहूंगा। यह विचार आते ही उसकी आँख से अश्रुधारा बहने लगी। वह कब सो गया यह भी उसे मालूम नहीं। वह स्वपन (सपना) देखने लगा कि एक श्वेत वस्त्र पहने कोई व्यक्ति मेरे पास आया और मुझे आवाज देकर कह रहा हैं ''प्रभात तू कहाँ हैं ? तू मुझे क्यों भूल गया ? तू मुझे इतना प्यार करता था कि उठने – बैठने में मेरी ओर निहारता था, बिना मेरी आज्ञा के कोई काम भी नहीं करता था। तूने पहले जैसा प्रेम क्यों छोड़ दिया ? तुझे संसार का वैभव इतना भाया कि अपने स्वर्गीय पिता को ही भूल गया तू क्यों मुझसे दूर चला गया ? देख ! मुझसे दूर होते ही तेरे ऊपर संकट का पहाड़ टूट पड़ा। मुझे आज भी तेरी चिन्ता है। तू जब भी मुझे पुकारेगा मैं तेरी सुनूंगा। इतना कह कर वह श्वेत छाया गायब हो गयी। और प्रभात नींद से जागकर इतना रोया और अपने को धिक्कारने लगा कि सचमुच मैंने परमेश्वर को अपने से अलग कर दिया था इसीलिये मेरे ऊपर यह संकट आ पड़ा है अब मैं क्या करू, मैं परमेश्वर से क्षमा मागूंगा और शेष जीवन उसी के सम्मुख व्यतीत करूंगा।

बच्चों तुमने देखा जब तक प्रभात परमेश्वर की निकटता में रहा, ईश्वर ने उसे खूब आशीषें दी। लेकिन जैसे ही वह परमेश्वर से दूर हुआ। मुसीबतों ने उसे आ घेरा और सम्पूर्ण जीवन वह विकलांग (अपाहिज) ही रहा। परमेश्वर तुम्हें सद्‌बुद्धि दें।

ATTENTION

If you have not renewed your membership by sending yearly subscription of Rs. 100, please send the amount immediately.

OR

If due to financial problem you are not in a position to send the yearly subscription of Rs. 100, please inform us immediately.

OTHERWISE we will have no option but to stop sending the magazine to you.

* *Join us in reaching the unreached.*
* *To help take the message of Gospel which is love, joy, peace, patience, kindness, goodness, faithfulness, gentleness and self-control and SALVATION*

Remember this: *"Whoever sows sparingly will also reap sparingly, and whoever sows generously will also reap generously."* **(2 Cor 9:6)**

प्रभु यीशु मसीह का द्वितीय आगमन

SHORLA DAVID
Gorakhpur

याद रखें

1. मृत्यु के बाद उद्धार का कोई अवसर नही।

2. लोग रैप्चर के बाद महाक्लेश और हज़ार साल राज्य में भी उद्धार प्राप्त करेंगे ।

समय तेजी से बीत रहा है बहुत सी भविष्यवाणियां पूरी हो चुकी है और बहुत सी पूरी होने वाली है प्रत्येक व्यक्ति को जानना चाहिये कि परमेश्वर हम से क्या चाहता है?(यहून्ना 3:16–18.)

इस लेख का प्रथम संदेश विश्वासी मसीहियों के लिये है जो उसके वचन के प्रति सच्चे है। दूसरेा संदेश चर्च आने वाले नाम के मसीहियों के लिये है जो नरक मे जाएंगे तीसरा संदेश पापियों के लिये है वे भी मौत के बाद नरक जाएंगे।

सच्चे विश्वासी : हजारो लोग भविष्य के लिये नही जानते है क्योंकि उनके पास परमेश्वर का वचन अध्ययन् करने के लिए समय नही है। हम जानते है यीशु मसीह अपने लोगों को लेने आने वाला है, जिसको रैप्चर (Rapture) कहते है अब कौन लोग रैप्चर किये जाएगें 1 थिस्सलुनीकियों 4:16–17 जो मसीह मे पाये जायेंगे। जिनका नया जन्म हो चुका है 1थिस्सलुनीकियों 5:4–8

यीशु मसीह का आना दो भागों में होगा

1. कलीसिया के लिये :(अचानक) 1 कुरिन्थियों 15:51–53
2. इस्त्राइल जाति के लिये प्रकाशितवाक्य 19:11–21

एक राजा के रूप में उनको छुड़ाने के लिये। एक निश्चित समय पर ।

I- Rapture (to catch up) प्रभु यीशु कलीसिया अर्थात अपने लोगों को उठा लेगा

पौलूस प्रेरित ने 1 कुरिन्थियों 15:51,52 और 1थिस्सलुनीकियों 4:16,17 में इस महत्वपूर्ण धटना का वर्णन किया है कि यीशु मसीह के बादलों पर आने के समय स्वर्ग में तीन धटनाएं होगीः–

1. यीशु मसीह जोर की आवाज में ललकारे गा (जैसे लाजर की कब्र पर पुकारा था)।

2. प्रधान स्वर्गदूत की आवाज सुनाई देगी।

3. परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी।

उस समय पृथ्वी पर तीन धटनाएं होगी।

1. यीशु की आवाज सुनते ही जितने विश्वासी प्रभु में मर गए है, जलाली बदन में जी उठेंगे।

2. जितने विश्वासी उस समय जीवित रहेंगे वे भी जलाली बदन में बदल जाएंगे।

3. तब सब विश्वासी एक साथ प्रभु के पास उठा लिए जाएंगे यह धटनांए पल भर में पलक झपकते ही धटित होगी।

ऊपर उठाए जाने के बाद स्वर्ग में क्या होगा ? यीशु मसीह विश्वासी को अपने वायदे के अनुसार अपने पिता के घर ले जाएगा उस स्थान पर जो हमारे लिये तैयार किया है यहून्ना 14:1–3

A. वहां पहुचने पर सब विश्वासी प्रभु यीशु के न्याय सिंहासन के सामने जमा होगें। 2कुरिन्थियों 5:10 यीशु विश्वासियों का न्यायी होगा। जो भले कार्य विश्वासियों ने किया है उसके लिये उन्हें ताज दिया जाएगा। जिन्होने नही किये और लापरवाह रहे उनको हानि उठानी होगी । वे ताज से वंचित रहेगे जैसे ओलम्पिक खेल में जीतने वाले को स्वर्ण पदक मिलता है और बाकी

खिलाड़ी अलग खड़े रहते है यद्यापि वह टीम के सदस्य है। 1कुरिन्थियों 3:13–15 में हम अग्नि (आग) द्वारा परीक्षा का वर्णन पढ़ते है जो कार्य हमने अपने स्वार्थ के लिये किये है वे फूंस के समान जल जाएंगे परन्तु जो कार्य विश्वासियो ने परमेश्वर की महिमा के लिये किये है उनके लिये निम्न 5 प्रकार के ताज पुरस्कृत किये जाएंगे।

1. एक अविनाशी ताज :– उन विश्वासियों को मिलेगा जिन्होंने अपने पुराने मनुष्यत्व पर विजय प्राप्त की है 1कुरिन्थियों 9:25–27

2. आनन्द का मुकुट :–जिन्होंने आत्माओं को प्रभु के लिये जीता है 1थिस्सलुनीकियों 2:19,20

3. जीवन का मुकुट :– जिन्होंने सताव और परीक्षाओं का सफलता पूर्वक सामना किया है (याकूब 1:12)

4. धार्मिकता का मुकुट :–उन को मिलेगा जो उस के द्वितीय आगमन की प्रतिक्षा कर रहे है 2तीमुथियुस04:8

5. महिमा का मुकुट :– उन रखवालों को मिलेगा जो यीशु की भेड़ो की सच्चे मन से रखवाली करते है (1पतरस 5:4)। परन्तु विशेष बात याद रखे कि किसी विश्वासी को मसीह के न्याय सिंहासन से नरक जाने की सजा नहीं मिलेगी क्यों कि वहाँ सभी नया जन्म पाए हुए लोग ही होंगे जिन्होंने यीशु के पवित्र लहु से अपने को साफ किया है। और उस को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता माना है।

B. दूसरी यहून्ना 5:24 प्रमुख घटना मेम्ने का विवाह उत्साह होगा। यीशु मसीह अपनी दूल्हन को अर्थात कलीसिया को अपने पिता के घर ले जाएगा। जहाँ बड़ी धूम धाम से विवाह भोज होगा। जैसे कि इस संसार में एक दूल्हा अपनी दूल्हन को अपने पिता के घर ले जाता है और वहाँ पिता की हैसियत के अनुसार भोज होता है। परमेश्वर पिता तो सारे विश्व का मालिक है। सारा धन दौलत उसी का है। अनन्तृ धन से सम्पन्न स्वर्गीय पिता इस भोज को एक हजार वर्ष के लिए होगा अर्थात एक हजार वर्ष तक राज्य पृथ्वी पर चलता रहेंगा। विवाह में पहिनने के लिये विश्वासियो को अपने दैनिक जीवन–आचरण से पोशाक तैयार करनी है प्रकाशितवाक्य 19:8 याद रहे धार्मिकता के कार्य द्वारा स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते क्योंकि यीशु ने क्रूस पर मृत्यु के द्वारा विश्वासियो के लिये धार्मिकता रूपी वस्त्र का उपाय कर दिया है उसे किसी प्रकार कमाया नहीं जा सकता।

II क्लेश–काल :–

विश्वासियो के ऊपर उठाए जाने की घटना क्या पृथ्वी के लोगों से गुप्त रहेगी। ऐसी बात नहीं जब इतने लोग अचानक गायब हो जाएँगे, जब, कर्मचारी स्कूलों, दफ्तरों ट्रेनों इत्यादि से गायब हो जाएँगे, तब सभी लोग ध्यान देंगे। यह अविश्वासी समझेंगे कि कोई अजीब घटना घटी है। कलीसिया के ऊपर जाने के बाद इस पृथ्वी की भयंकर दशा होगी। ख्रीष्ट विरोधी प्रगट होगा और महाक्लेश आरम्भ होगा। क्लेश काल सात वर्षों का होगा दानिय्येल 9:27'' एक हफ्ते के लिये वह बहुतों से दृढ़ वाचा बांधेगा'' अर्थात ख्रीष्ट विरोधी इस्त्राइल के साथ एक सात वर्षीय संधि करेगा और उन को यरूशलेम के मन्दिर में भेंट चढ़ाने की अनुमति देगा। पृथ्वी पर नरक समान क्लेश काल को साढ़े तीन वर्ष के दो भागों में बांटा गया है अन्तिम साढ़े तीन वर्ष आरम्भ होने पर ख्रीष्ट विरोधी इस्त्राइल के साथ अपनी संधि को तोड़ देगा और यरूशलेम के मन्दिर में अपनी घृणित मूर्ति स्थापित करेगा। और मेलबलि तथा अन्न बलि को बन्द करवा देगा। इस काल को बयालीस माह (प्रकाशितवाक्य 11:2) एक हजार दो सौ साठ दिन (प्रकाशितवाक्य 11:3 तथा महाक्लेश (मत्ती 24:21) आदि विभिन्न नामों से पुकारा गया हैं । इस क्लेश काल में पीड़ा एवं करता धोरतम् रूप में होगा और संसार पर ख्रीष्ट विरोधी

शासन करेगा। (प्रकाशितवाक्य 13:8)

यह सात वर्षीय समय ईश्वरीय न्याय और क्रोध का काल होगा। यह एक के बाद एक तीन लहरों में उड़ेला जाएगा और प्रत्येक लहर में सात सात खंड़ हैं (प्रकाशितवाक्य 6 – 16 अध्याय)

I. सात मुहरों का न्याय – निर्णाय (प्रका 6:1–8:2)

1. पहली मुहर – सफेद घोड़ा : ख्रीष्ट विरोधी
2. दूसरी मुहर – लाल घोड़ा : युद्ध
3. तीसरी मुहर – काला घोड़ा : अकाल
4. चौथी मुहर – पीला घोड़ा : मृत्यु एवं नरक
5. पाँचवी मुहर – शहीदों की स्वर्गिक आत्माएँ
6. छढ़वीं मुहर – विश्व व्यापी उत्थल पुथल बर्बादी
7. सातवीं मुहर – सात तुरहियां।

II. दूसरी लहर सात तुरहियों का न्याय (प्रकाशितवाक्य 8:7–11:19)

1. पहली तुरही – रक्त मिश्रित ओलों की वर्षा 1/3 पेड़ पौधों का विनाश
2. दूसरी तुरही – आकाश से अग्नि पिंड गिरना 1/3 समुद्र प्रदूषण
3. तीसरी तुरही – आकाश से तारे गिरना 1/3 जल स्त्रोंतों का प्रदूषण
4. चौथी तुरही– अधंकार 1/3 सूर्य, चाँद व तारों का अंधकार।
5. पाँचवी तुरही – दुष्टात्माओं का आक्रमण।
6. छढवीं तुरही – शैतान की सेना – 1/3 मानव जाति का संहार
7. सातवीं तुरही – ख्रीष्ट राज्य की धोषणा

III. तीसरी लहर सात कटोरों का न्याय (प्रकाशितवाक्य 16 अध्याय)

1. पहला कटोरा : पृथ्वी पर उड़ेल ने पर ख्रीष्ट विरोधी के पूजकों पर फोड़े।
2. दूसरा कटोरा – समुद्र पर:– जल रक्त समान लाल
3. तीसरा कटोरा – जल स्रोतों पर – जल रक्त सा लाल
4. चौथा कटोरा–सूर्य पर :– भयंकर ताप से मनुष्य झुलसेगा।
5. पाँचवा कटोरा – ख्रीष्ट विरोधी के राज्य पर – अधंकार व पीड़ा
6. छठवाँ कटोराः– फ़रात नदी पर – नदी सूख गई – हर मगिदोन में युद्ध के लिये जमा।
7. सातवाँ कटोराः– वायु पर – अतुल्य भूकम्प व ओले।

क्लेश का उद्वेश्य :– पाँच प्रमुख कारण है जो पाँच खास व्यक्तियों से जुड़े है : –

1. इस्त्राएल का परिशोधन : – यहूदियों को बचने का कोई उपाय न होगा और क्लेश रूप अग्नि से परमेश्वर उन को शुद्ध करेगा (जकर्याह, 13:8– 9) तब वे कहेंगे यहोवा हमारा परमेश्वर है, और यहोवा उत्तर देगा वे मेरे लोग है। उस समय वे रो रो कर पाप अंगीकार और छुटकारे की बिनती करेगे। तब परमेश्वर अपनी दया से इस्त्राएल को बचाएगा (यशायाह 64:1–9)

2. गैर यहूदियों पर दण्ड़ : – क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के इकलौते पुत्र अर्थात प्रभु यीशु को अस्वीकार कर दिया (यशायाह 24:1–6)

3. परमेश्वर की सामर्थ का प्रमाण :– साढ़े तीन हजार वर्ष पहले फिरौन राजा ने चुनौती दी ''यहौवा कौन है कि मैं उसकी बात मान कर इस्त्राएलियों को जाने दूँ (निर्गमन 5:2) और परमेश्वर ने दस विपत्तियों के द्वारा अपनी सत्यता व शासन सत्ता प्रकट की। इसी प्रकार की मूर्खता ख्रीष्ट विरोधी भी करेगा। सत्य परमेश्वर को अस्वीकार कर के अपने को ईश्वर धोषित करेगा और परमेश्वर अपनी सामर्थ्य को प्रकट करने के लिये फिर महामारियाँ उड़ेलेगा जिनका विश्वव्यापी प्रभाव होगा।

4. शैतान के असली स्वभाव को दर्शाना : – जब

परमेश्वर इस सर्प –राक्षस के ऊपर से अपनी सारी रोक हटा लेगा (2थिस्सलुनीकियों 2:7) तब वह पूरी ताकत से अपनी दुष्टता की वर्षा करेगा यह जानते हुए की उसका समय समाप्त हो रहा है, वह अपना विष अपनी पूरी ताकत से उड़ेलेगा (प्रकाशितवाक्य 12:12)।

5. विश्वास करने वालो को छुड़नाः– इस भयानक क्लेश के समय पश्चाताप, मनफिराव व विश्वास करने वालो को अपनी करूणा से अनगिनत आत्माओं को जीतेगा (प्रकाशितवाक्य 7:9 –10 13–14)।

द्वितीय आगमन

बाइबल में पहली भविष्यवाणी हनोक द्वारा पृथ्वी के न्याय की बात कही (यहूदा 1:14) और अन्तिम प्रकाशितवाक्य 22:20 ये है यीशु मसीह ने द्वितीय आगमन के बारे में 21 बार कहा जिसमें दो निम्न है (मत्ती 24:27–30 और मत्ती 26:64)। यीशु के स्वर्गारोहण के समय स्वर्गदूतो ने भी कहा कि वह पुन वापिस आएगा(प्रेरितों के काम 1:9–11)।

द्वितीय आगमन का स्थान : – राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में वह उसी स्थान पर वापिस आएगा जहां से स्वर्गारोहण हुआ था अर्थात जैतून नामक पर्वत पर (जकर्याह14:4) प्ररितों के काम 1:9–12 मत्ती 24व 25 अध्याय में पुनरागमन सम्बन्धी चिन्हों का वर्णन जैतून पर्वत पर ही दिया था

द्वितीय आगमन का उद्देश्यः–

1. खीष्टविरोधी को पराजित करने हेतुः– खीष्ट विरोधी और उस की सेना को पराजित करने हेतु आने वाला है (प्रका0 19:19–21)।

2. इस्त्राएलियों को पुनः एकत्रित करने हेतुः– अपनी प्रतिज्ञानुसार (यशा 43:5–6, यहेजेकल 36:24–36) के अनुसार 1948 में आधुनिक इस्त्रायल राष्ट की स्थापना से प्रारम्भ हुआ है और द्वितीय आगमन तक जारी रहेगा। उन को एकत्रित कर के अपनी प्रजा के रूप में पुनस्थापित करेगा ।

3. जीवित लोगों का न्याय करने हेतुः– क्लेश काल से जीवित बचे गैर यहूदियों के लिए तय करेगा कि वे मसीह के हजार वर्षीय राज्य में प्रवेश कर सकते है या नहीं। (मत्ती 25:31–46) भेड़ों को बकरियों से अलग करने का न्याय होगा। और यहूदियों को जंगल में जमा कर कर के तय करेगा कि कौन 1000 वर्षीय राज्य में प्रवेश करेगा।

4. मृतकों को पुनः जीवित करने हेतुः– (प्रका 19:11–21 के अनुसार पुराने नियम काल के विश्वासियों तथा क्लेश – काल के शहीदों का पुनस्स्थान होगा व यह लोग मसीह के साथ शासन करेंगे प्रका 20:4–6

5. शैतान को बांधने हेतुः– शैतान को बांध कर एक हजार वर्ष के लिए अथाह कुण्ड में डाला जाएगा (प्रका 20:1–3)।

6. राजा के रूप में सथापित करने हेतुः– यीशु अपने महिमामय राज्य सिंहासन पर बैठने तथा सारी पृथ्वी पर शासन करने आएगा। (मत्ती 19:28, लूका 1:32–33, प्रकाशितवाक्य 19:16)।

(to be completed in the next issue)

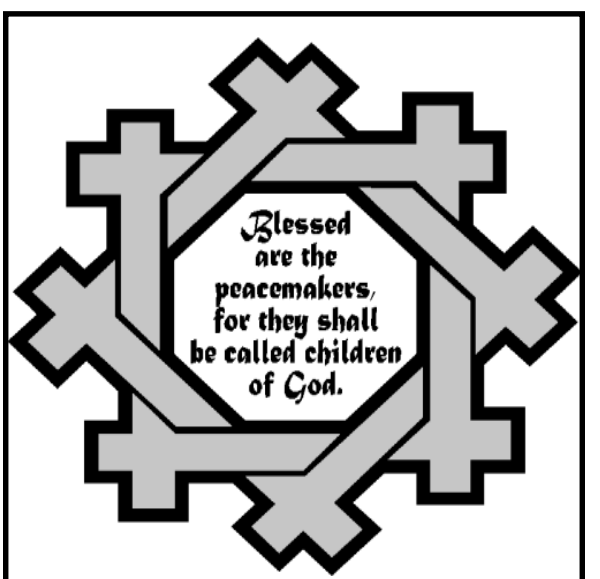

Trinity Fellowship Society (Regd.)

TRINITY CHU

C-3010, Indira Nagar Lucknow-220 016

Tel :- (0522)- 3025069, 2389956, 2359833

Sunday	-	Worship Service.	-	9:00 a.m.
Monday	-	Ladies Prayer meeting (Every alternate Monday).	-	6:00 p.m.
Tuesday	-	Prayer & Worship.	-	6:30 p.m.
Friday	-	Prayer & Worship.	-	6:30 p.m.

Branch of the Trinity Church

opened on Sunday 16th July 2006.

at **Kanpur**

271, Pardevanpur, Lalbangla, Kanpur

Please pray for

Pastor Raj Kumar David

who has been ordained to serve the master through this branch.

Jesus said:- *"Yet a time is coming and has now come when the true worshipers will worship the Father in spirit and truth, for they are the kind of worshipers the Father seeks. God is spirit, and His worshipers must worship in spirit and in truth."* **(John 4:23-24)**

Hosanna

Vincent Charles
President / Director,
Trinity Fellowship Society.

"BEHOLD
I stand at
the door
and knock:
if any man
hear my voice,
and open the
door, I will come
in to him, and will
sup with him,
and he with me."

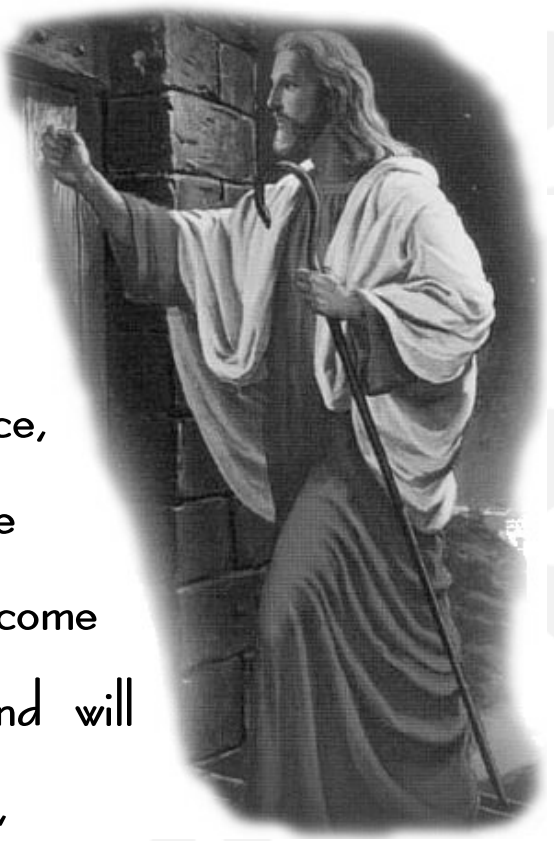

(Revelations 3:20)

Aatmik Safar

Computer designing & composing by Rahul Charles, Computer typing by Igenious Computer, Indira Nagar ,Lucknow.
Printed at OHM OFFEST, 85 Gautam Budh Marg, Katra Maqboolganj, Lucknow, 9839902041.